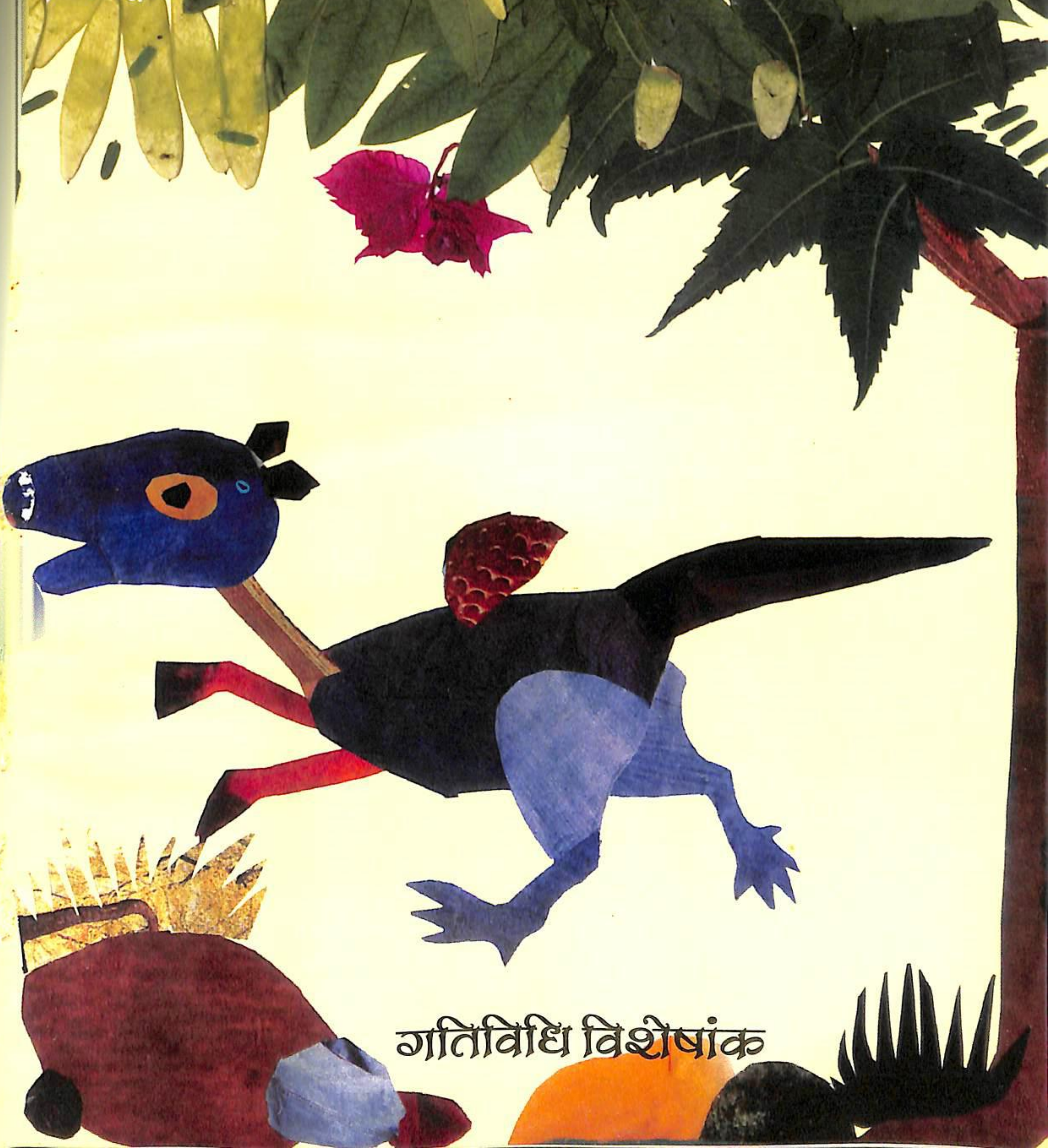
चकमक

मई-जून 2006 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 20.00



गतिविधि विशेषांक



मौलिका शर्मा, 7 वर्ष, मुम्बई



अमित, भोपाल, म.प्र.

दोस्तो,

छुट्टियों के उठापटक और धमाल भरे दिन मुबारक हों। हँसी-ठहाके, किस्से-कहानी, रतजगे और घुमक्कड़ी से लबालब इन दिन-रातों में इस बार चकमक में तुम्हें करने-धरने के लिए बहुत कुछ मिलेगा। खेल, क्राफ्ट, आरेगेमी, कोलॉज, प्रयोगों के दर्जनों रंगीन, सजे-धजे पन्ने छुट्टियों के मज़े को थोड़ा और बढ़ा पाएँगे, ऐसी उम्मीद है। इसके अलावा साहित्यकार राजेन्द्र शर्मा ने खास चकमक के लिए अपनी पाकिस्तान-यात्रा का वर्णन लिखा है।

हमारी जीवन शैली में आते जा रहे बदलावों की वजह से हमारे आसपास के कई जीव-जन्तु खत्म होते जा रहे हैं। कुछ खत्म होने की कगार पर हैं। गिद्ध इनमें से एक है। इस अंक में गिद्ध पर एक लेख दे रहे हैं। अगले कुछ अंकों में ऐसे अन्य जीवों के बारे में भी तुम पढ़ सकोगे।

यह अंक मई-जून का संयुक्त अंक है। अगला अंक यानी जुलाई का अंक तुम्हें जुलाई के पहले हफ्ते में मिलेगा।

हाल ही में कागज़ के दामों में आई अप्रत्याशित तेज़ी की वजह से हमें चकमक के दाम बढ़ाने पड़ रहे हैं। इसकी विस्तृत जानकारी पेज नम्बर 28 पर है। हमें पूरा विश्वास है पाठकों के जुड़ाव पर इससे रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ेगा।

पिछले कुछ दिनों से (शायद परीक्षाओं में लगे होने की वजह से) तुम्हारे पत्र और रचनाएँ हमें कम मिल रही हैं। आशा है अब छुट्टियों में हमें तुम्हारी ढेर सारी रचनाएँ और चिट्ठियाँ मिलेंगी। बेशक इनमें लिखना कि तुम चकमक में किस विषय पर सामग्री चाहते हो।

आशा है ये छुट्टियाँ तुम्हें पूरे साल के लिए तरोताज़ा करेंगी...

तुम्हारा
सुशील

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 21, अंक-10-11 मई-जून 2006

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

क्या-क्या है इस अंक में

लेख

कहानी

कविता

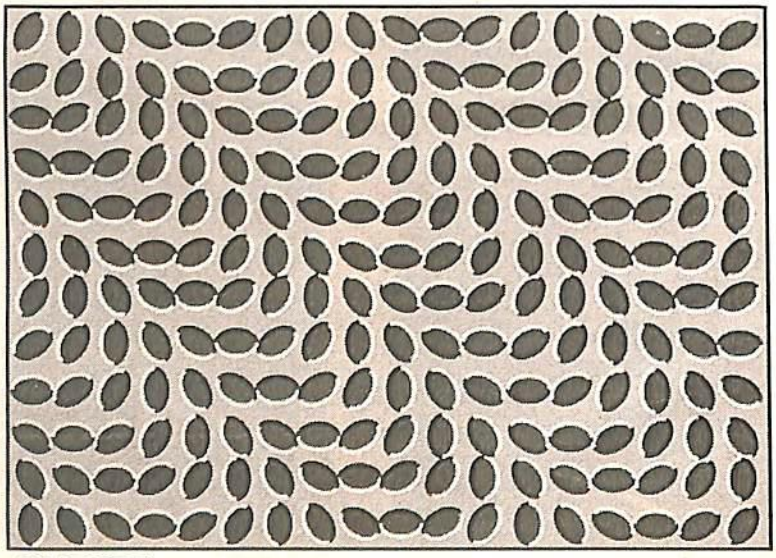
यात्रा संस्मरण

हमेशा की तरह

गतिविधियाँ

आवरण - पत्तियों व कागज़ से बना कोलाज (विप्लव शशि)

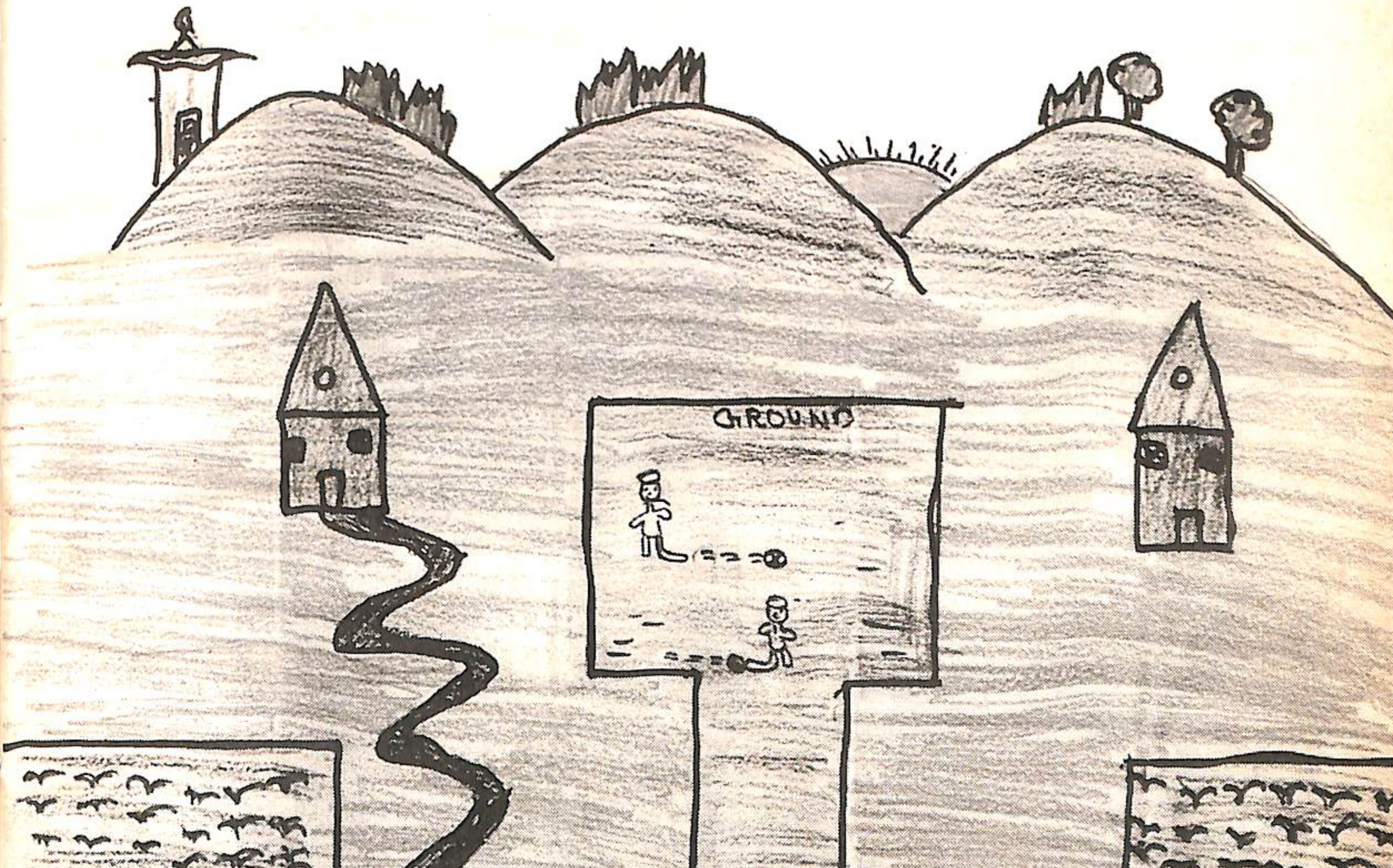
इस अंक की सज्जा व चित्र - विप्लव शशि



तिलक सैहुर की कहानी

हम तिलक सैहुर गये थे। तो हमें यह नहीं मालूम था कि हमको पहाड़ मिलेंगे। हम सब वहाँ पहुँच गए। तो रामकिशोर और राघवेन्द एवं हेमंत ऊपर गए। तो फिर हमने सोचा कि ऊपर चढ़ें, हम पहाड़ पर चढ़ गए। फिर हमें एक गुफा मिली। हमने सोचा कि यह तो शंकर भगवान की गुफा है तो हम और ऊपर चढ़ गए। और फिर नीचे उतर गए। फिर हमने दाल-बाटी, हलवा की पीस खाई फिर हमने घर जाने की तैयारी की। तो हम ट्रैक्टर पर बैठ गए और हमारे पीछे बैलगाड़ी थी। तो वह आदमी बहुत जमकर भगा रहा था। वह ट्रेक्टर से आगे हो गई तो अमित चाचा ने भी बहुत भगाया कि सब बैलगाड़ी ट्रैक्टर से हार गई और हम घर आ गए।

- राघवेन्द्र साध, पाँचवीं, हिरनखेड़ा, म.प्र.



आयुष व्यास, उदयपुर, राजस्थान

आविष्कार

हमारे गाँव से एक कस्बा लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर है वहाँ पर दो भाई रहते हैं। जो कि गूँगे और बहरे भी हैं वे दोनों मजदूरी का काम करते हैं। उन दोनों ने मिलकर एक काठ की ऐसी साइकिल बनाई है जो पहिए की है और लगभग 50 किलोमीटर तक का वज़न ले जा सकती है। वे दोनों दूर के गाँवों में इसी से जाते हैं और अपनी साइकिल को बकायदा सलामती से रखते भी हैं। वे किसी को भी अपनी साइकिल नहीं देते। यह एक उनके प्रति आविष्कार है वो अब खुशी-खुशी रहते हैं और जीवनयापन करते हैं।

- आकाश विश्वकर्मा, चौथी, छतरपुर, म.प्र.

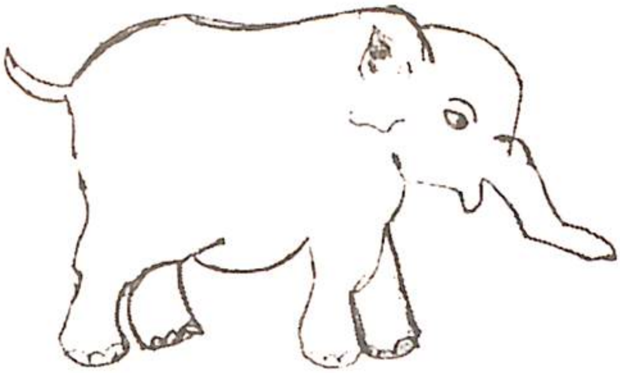
नादान भोलू

भोलू बंदर चला जा रहा
यमुना जी के तीरे
पानी के अंदर दिखती थी
भोलू की तस्वीरें,
दुश्मन मेरा खड़ा सामने,
ऐसा उसने सोचा
क्यों ना इसको सबक सिखाऊँ,
दे पानी में गोता
कूदा भोलू जल के अंदर
लुढ़क गया पानी में
मन में बहुत-बहुत पछताया,
भीगा नादानी में।

प्रस्तुति - अंजली ब्राह्मणे, सातवीं, दुर्ग, छत्तीसगढ़



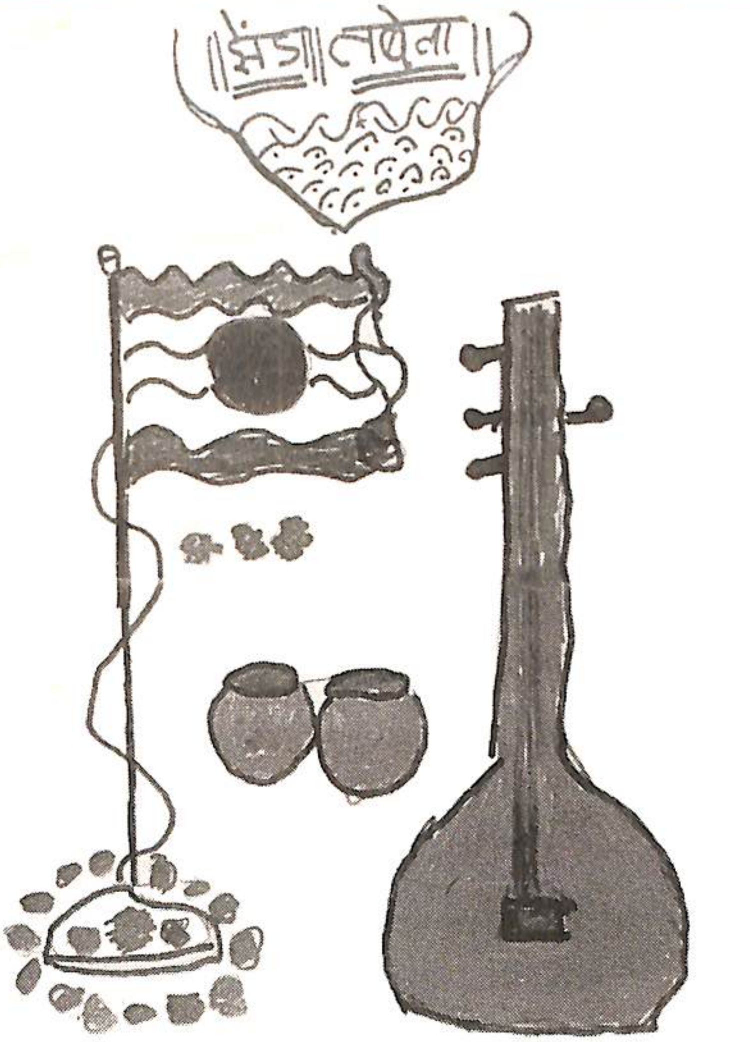
अंजलि ब्राह्मणे, दुर्ग, छत्तीसगढ़



हाथी

एक बार की बात है हाथी बाज़ार जा रहा था। रास्ते में एक चींटी स्कूल जा रही थी। हाथी ने चींटी से पूछा- क्यों चींटी बहन आप कहाँ जा रही हो। चींटी ने कहा- मैं स्कूल जा रही हूँ और आप कहाँ जा रहे हो। हाथी कहता है कि मैं बाज़ार जा रहा हूँ। तो हाथी चींटी से बोलता है कि क्या आप भी बाज़ार चल रही हो। तभी चींटी ने कहा- नहीं... नहीं.. नहीं मैं तो स्कूल पढ़ने जा रही हूँ। बाज़ार तो कभी और जा सकते है लेकिन स्कूल जाना बहुत ज़रूरी है। इतना कहकर वह नन्हीं चींटी वहाँ से फौरन चली गई। हाथी आगे चल दिया। आगे चलते-चलते हाथी को दो लड़कियाँ मिली। एक का नाम सोनू था दूसरी का नाम चाँदनी था। वह बाज़ार से आ रही थीं। एक ने केला और दूसरी ने सेब लाया था। तो केला देखकर हाथी का मन बहल गया। तो हाथी सोनू के केले छीन कर खा गया। तो सोनू उदास होकर वही बैठ गई। चाँदनी ने हाथी से कहा- आपने हमारे केले तो छीन लिए मगर हमें आपकी पीठ पर बैठके हमारे घर छोड़कर आना पड़ेगा। तो हाथी सोच में पड़ गया कि न जाने इन लोगों का घर कितनी दूर है। हाथी ने कहा ठीक है आप सोनू को मनाओ मैं अभी आपको आपके घर छोड़कर आता हूँ। तो दोनों सहेलियाँ हाथी की पीठ पर बैठकर अपने-अपने घर चली गईं। घर आने के बाद वो जब मिली तो उन्होंने बाज़ार का मज़ा लिया।

चित्र एवं प्रस्तुति - मोहनी गौर, छठी
हिरनखेड़ा, म.प्र.



आरती हराले, तीसरी, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

मेरी माँ

सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ
जब मैं हँसता वो भी हँस जाती
जब मैं रोता दिल बहलाती
जब मैं लड़ता मुझको समझाती
जब मैं भटकता राह दिखलाती
सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ

स्कूल के लिए मुझे उठाती
आर्ट की मेरी फाईल बनवाती
हिंदी का भी पाठ पढ़ातीं
इंग्लिश की ग्रामर समझातीं
सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ

मेरे कपड़ों को सिलवाती
मेरे कोट का बटन लगाती
मेरी जींस को रफू कराती
मेरे कपड़ों को धुलवाती
सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ

मेरे सारे काम कराती
मेरी पसंद का खाना बनाती
मेरे लिए वे लोरियाँ गाती
मेरे साथ बच्ची बन जाती
सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ

मुझ में नया उत्साह जगाती
मेरी मुसीबत में काम आती
घर का सारा काम निबटाती
फिर वो थककर सो जाती
सबसे सुन्दर सबसे अच्छी ऐसी ही है मेरी माँ

- सैय्यद नौमान अहमद, नौवीं, अलीगढ़, उ.प्र.



सपना गोस्वामी, सातवीं, हिरनखेड़ा, म.प्र.

खीर चोर

एक थी चिड़िया, एक था कबूतर, एक था कुत्ता और एक थी बिल्ली। सबने मिलकर विचार किया कि अपनी खीर बनाएँ। कोई ने लाया लकड़ी, कोई लाया पानी, कोई लाया शक्कर, कोई लाया दूध और खीर बनकर तैयार हो गई। उन्होंने कहा सब खा लें। बिल्ली ने कहा- मेरी तो आँखें आई है और वह आँखों पर पट्टी बाँधकर सो गई सबने अपने अपने हिस्से की खीर खाई और शेष बची हुई खीर को रात के लिए ढ़ाँककर रख दी। सब अपने-अपने काम पर चले गए। तब बिल्ली उठी और सबके हिस्से की खीर खाकर फिर आँखों पर पट्टी बाँधकर सो गई।

रात को जब सब काम पर से आए तो देखा खीर का बर्तन खाली था। हर एक से पूछा- क्यों भाई तुमने मेरी खीर खाई है सबने इंकार किया। बिल्ली से पूछा वह भी बोली- मैं क्या जानू मेरी तो आँखें आई हैं। सुबह से पट्टी बाँधे पड़ी हूँ।

तब सबने विचार किया कि एक सूखे कुएँ पर कच्चे धागे से झूला बाँधा जाए। सब बारी-बारी से उस पर बैठे और कहें-मैंने खीर खाई हो तो झूला टूट जाए। जिसने खीर खाई होगी उसकी बार झूला टूट जाएगा। पहले चिड़ियाँ बैठी चीं-चीं मैंने खीर खाई हो तो झूला टूट जाए। झूला नहीं टूटा। फिर कबूतर बैठा बोला- गुटर गूँ... गुटर..गूँ मैंने खीर खाई हो तो झूला टूट जाए। झूला नहीं टूटा। फिर कुत्ता बैठा बोला- भों...भों.. मैंने खीर खाई हो तो झूला टूट जाए। झूला नहीं टूटा।

फिर बिल्ली बैठी बोली म्याऊँ.. म्याऊँ मैंने खीर खाई हो तो झूला टूट जाए। झूला टूट गया। और बिल्ली सूखे कुएँ में गिर गई।

वंदना मालवीय, सातवीं, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.



राजन, चौथी, नजफगढ़, नई दिल्ली

बूझो पहेली

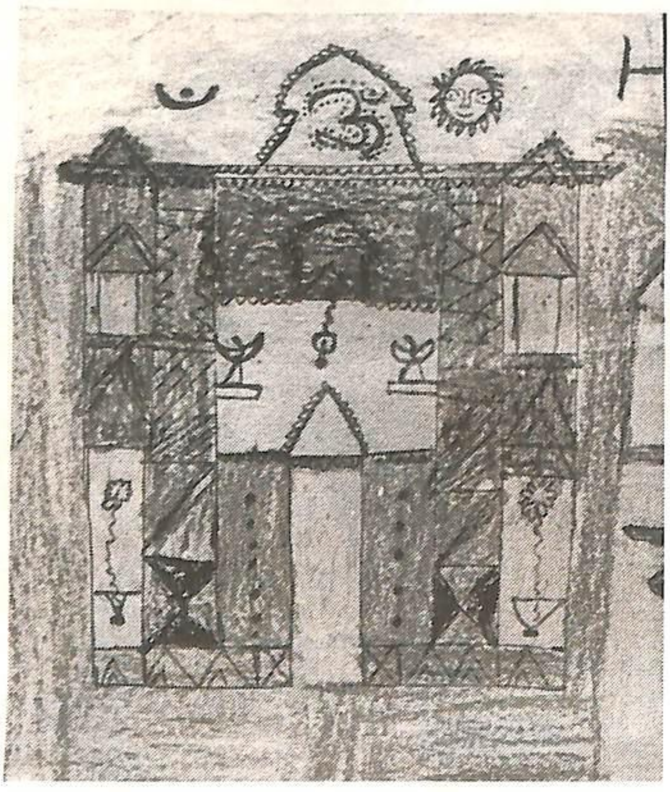
1. जा वे जा मेरे सरीखे दो ला।
2. एक कोठी में भैंस डकारे।
3. सब लोग चले जाएँ, चिड़िया रानी को लटका जाएँ।
4. हरी हूँ मैं, मेरे बच्चे काले, मुझे छोड़ मेरे बच्चों को खा ले।

परेश मालवीय, छठी, हिरनखेड़ा, म.प्र.

उत्तर - 1. कैंची 2. नारियल 3. ताला 4. इलायची



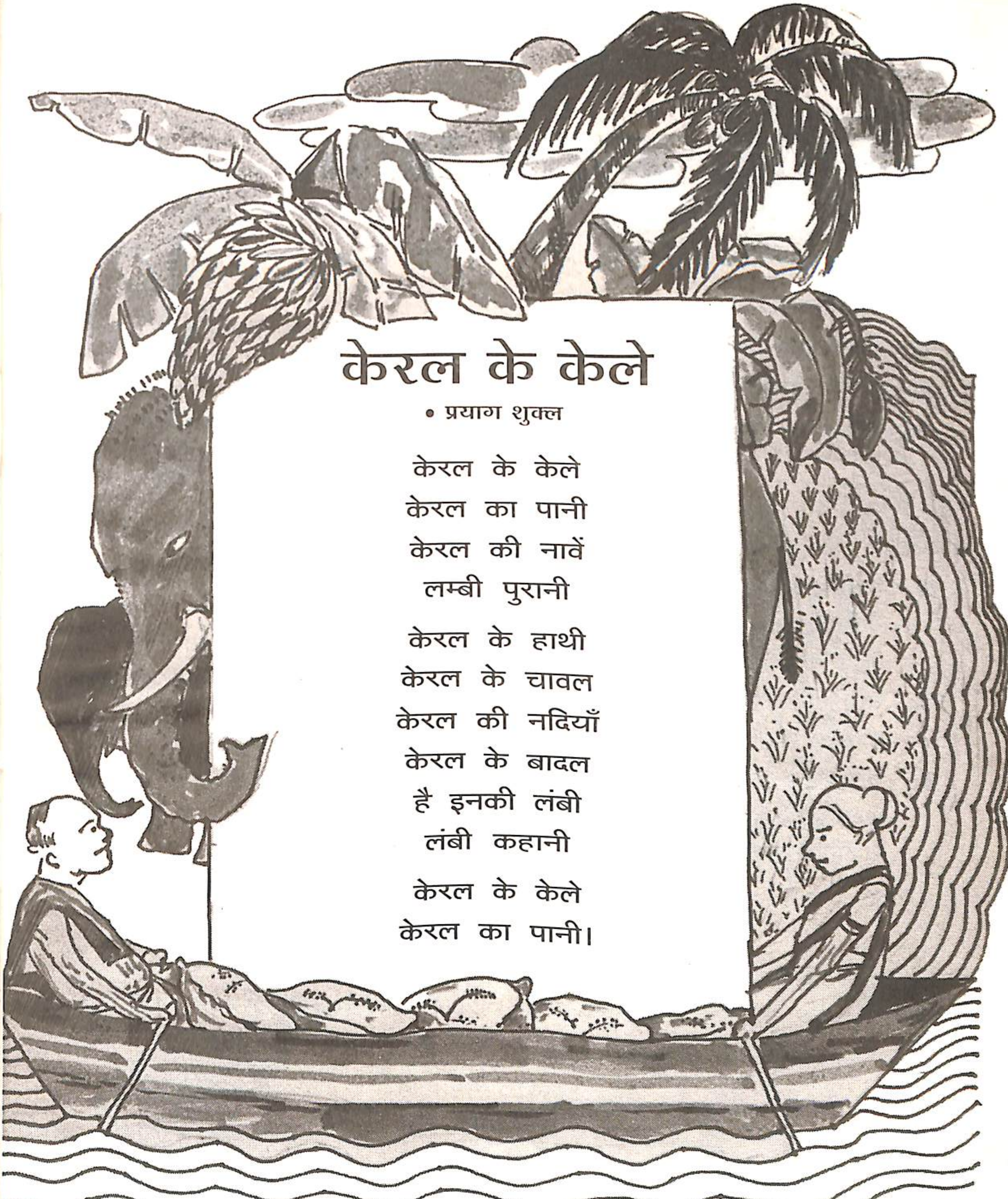
दीक्षिता साकिया, तीसरी, डिब्रुगढ़, असम



सुखवंती, बालिका गृह, भोपाल



रितिका गौर, 3 साल, होशंगाबाद, म.प्र.



केरल के केले

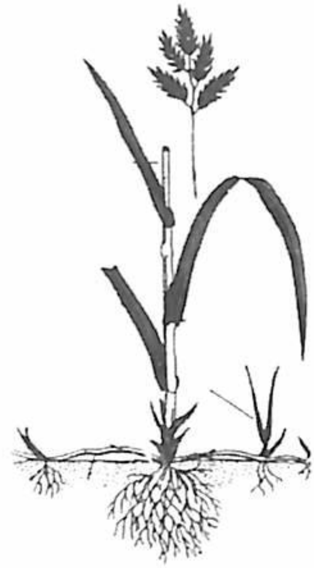
• प्रयाग शुक्ल

केरल के केले
केरल का पानी
केरल की नावें
लम्बी पुरानी

केरल के हाथी
केरल के चावल
केरल की नदियाँ
केरल के बादल
है इनकी लंबी
लंबी कहानी

केरल के केले
केरल का पानी।

घास बड़ी तू खास!



घास तो घास है!
घास जैसी छोटी-सी चीज़ के
बारे में क्या सोचना?

अच्छा तो सुनो!

❋ पैर तले की दूब से लगाकर सौ फुट ऊँचे बाँस तक घास हर आकार में पायी जाती है।

❋ घास पशुओं का ही नहीं- मनुष्यों का भी मुख्य भोजन है।

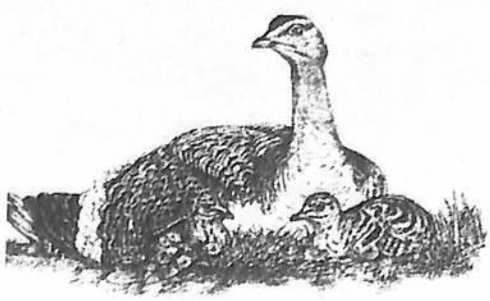
❋ घास के मैदान हिरन, चीतल साँभर, बारहसिंगा, गेंडा, चीता आदि के प्राकृतिक रहवास हैं।

❋ घास दस हज़ार तरह की होती है।

❋ धरती का चौथाई हिस्सा ज़मीन-घास से ढँकी है।

❋ बर्फ ढँके पहाड़ों से रेगिस्तान तक और ध्रुवों से समुद्र तट तक-घास हर जगह पायी जाती है।

क्या अब भी घास में कुछ ख़ास नहीं?
ज़रा सोचो!

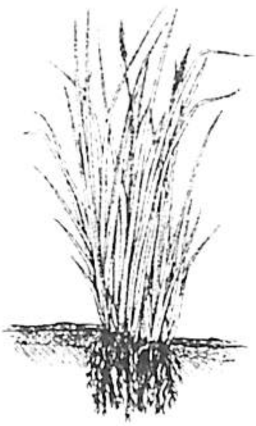


एक पौधा है। एक गाय या बकरी आयी
और उसे खा गयी।
क्या होगा?
पौधा सूख जाएगा।
लेकिन घास?
घास नहीं सूखेगी।
क्यों?

घास की बनावट

पौधे ऊपर से बढ़ते हैं।
घास ज़मीन के साथ-साथ
और कभी-कभी ज़मीन के नीचे भी।
पौधा ऊपर से काट दो या तोड़ दो -
खल्लास!
लेकिन भले काटो-छीलो-नोचो
मजे से बढ़ती जाएगी घास!





घास का तना गोल और पोला होता है।
या उसके भीतर नरम रसदार गूदा होता है।
घास के पत्ते लम्बे होते हैं
पहले एक इधर। फिर एक उधर। फिर एक
इधर फिर एक उधर।



घास के फूलों में न पंखुरी होती हैं न सुगन्ध
घास के फूल अक्सर गुच्छों में होते हैं
घास की जड़ें जाल की तरह आपस में उलझी
हुईं होती हैं
वे ज़मीन को कसकर पकड़े होती हैं।

क्या हमारी अकल घास चरने गयी है?



अच्छा बताओ गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार,
जौ और बाज़रा में एक जैसा क्या है?

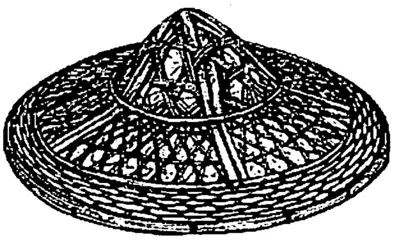
ये सब हमारा भोजन हैं।

बिल्कुल ठीक। और क्या चीज़ इनमें एक
जैसी है?

ये सब घास के बीज हैं।

अक्ल का तो पता नहीं. पर घास न हो तो
हम लोग खायेंगे क्या?

क्या घास दूध देती है?



गाय - भैंस-भेड़-बकरी आदि पशु क्या खाते हैं?
घास!
दूध हमें किससे मिलता है?
और दही-मक्खन-पनीर-घी?
मावा-गुलाबजामुन - रसगुल्ला - चमचम?
टॉफी - चॉकलेट - आइसक्रीम?

क्या तुम जानते हो?

हमारे देश में जितने दुधारू पशु हैं उतने किसी देश में नहीं हैं।

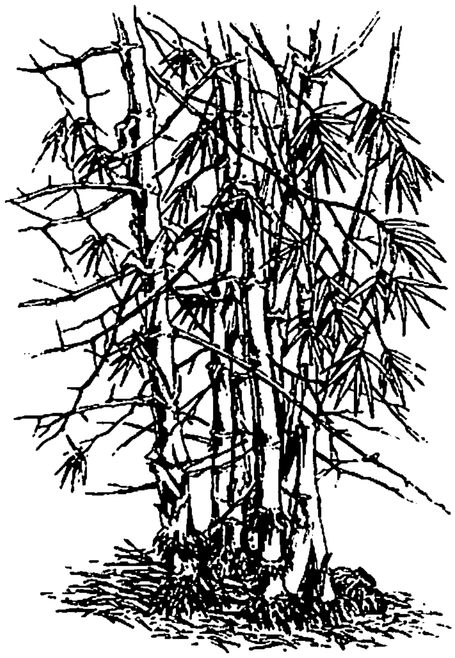
लेकिन चरागाह हमारे देश में सिर्फ 4 प्रतिशत भूमि पर हैं।

और वे भी दिनोदिन नष्ट हो रहे हैं।

कहीं कॉलोनी बनती जा रही हैं

कहीं खेत और कहीं कारखाने!

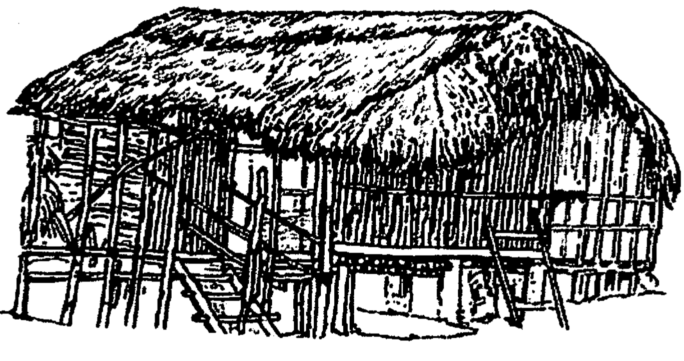
पशुओं को घास नहीं मिलेगी तो वे खायेंगे क्या?



घास के छिपे काम

क्या तुम जानते हो?

- हर साल 60,00,00,000 (साठ करोड़ टन) टन उपजाऊ मिट्टी बारिश के साथ बहकर नदियों में चली जाती है।
- इससे नदियों के पेटे उथले हो जाते हैं।
- इससे बाढ़ आती है।
- इससे बाँधों की जल-भराव क्षमता कम हो जाती है।
- इससे पीछे छूटी ज़मीन अनुपजाऊ और बंजर हो जाती है।



कौन लड़ेगा इस मुसीबत से?

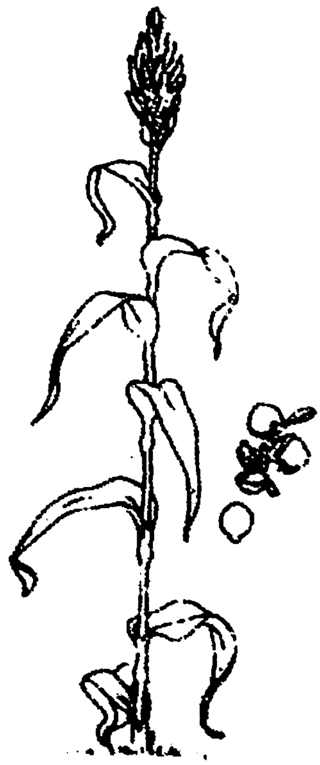
घास!

हमारी सबसे छोटी लेकिन सबसे मज़बूत योद्धा।





घास की जड़ें मिट्टी को पकड़कर रखती हैं
और पानी के साथ बहने नहीं देतीं।
घास ज़मीन पर बहते पानी की रफ्तार को भी कम कर देती है।
और इस तरह पानी को धीरे-धीरे ज़मीन के भीतर उतरने में मददगार होती है।



क्या-क्या बनता है घास से?

घास को संस्कृत में कहते हैं दूर्वा - जिससे दूब शब्द बना। और हर पूजा में दूर्वा ज़रूर रखी जाती है
जीवन के लिए ज़रूरी चीज़ के प्रतीक के रूप में।
और एक घास होती है जिसे कहते हैं 'कुश' काँस
इससे बनता है आसन।

अब तुम बताओ



घास से और क्या-क्या बनता है?
चटाई, परदे, पंखा, सूपड़ा, टोकरी, कुर्सी, मेज़, टोप, छप्पर, कुटिया... और?
ज़रा दिमाग पर ज़ोर डालो!
(याद रखना - बाँस भी एक प्रकार की घास होती है। और बेंत भी। और सरकण्डा भी!)

सबसे लम्बी घास

जानते हो सबसे लम्बी घास कौन-सी है?
जी हाँ - बाँस।
एक प्रकार का बाँस तो ऐसा होता है
जो पचास मीटर तक लम्बा हो जाता है।
और बड़े होने की जल्दी इतनी - कि 24
घण्टे में 121 से.मी. तक बढ़ जाता है।
तो क्या ऐसी घास को हम मिस्टर लम्बू घास
कह सकते हैं?
ठीक है मिस्टर लम्बू घास
बताइये आप हमारे किस काम आ सकते हैं?

मैं हूँ बाँस मैं हूँ बाँस
पालने से मुरदे की टिकटी तक
बच्चों की बाँसुरी से बूढ़ों की लाठी तक
रहता हूँ मनुष्य के साथ
कभी मकान में, कभी मचान में।
कभी कुर्सी में, कभी दीवान में।
कभी आशियाने में, कभी शामियाने में।
कभी नाव खेने में, कभी पुल बनाने में।
साथ साथ साथ
मैं हूँ बाँस।

क्या तुम जानते हो?

- बाँस से वंशलोचन नामक दवा निकलती है।
- बाँस का अचार भी बनाया जाता है।
- बाँस कागज़ बनाने के भी काम आता है।





और कुछ सरल पहेलियाँ

सबसे मीठी घास कौन-सी? उत्तर - गन्ना
सबसे खुशबूदार घास कौन-सी? उत्तर - खस
सबसे लचीली घास कौन-सी? उत्तर - बेंत

हम घास खाते हैं

यह कौन बोला?
गाय? भैंस? गधा? घोड़ा?
नहीं,
मनुष्य!
हमारे सारे अनाज घास के ही बीज हैं।
जैसे चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मक्का,
जौ आदि

और क्या करते हैं हम घास का?

मूँज भी एक घास है जिससे रस्सी बनती है।

लेमन ग्रास लस्सी-शर्बत-सूप आदि में खुशबू के लिए डाली जाती है।

ब्राह्मी, शतावर, गोखरू आदि अनेक औषधि घास से ही मिलती हैं।

ज़रा पता करो

- जिस गाय का दूध तुम पीते हो वह चरने कहाँ जाती है?
- चरागाह या गोचर भूमि तुम्हारे घर से कितनी दूर है?
- क्या इसका इलाका दिन ब दिन कम होता जा रहा है?
- इस भूमि पर कौन अतिक्रमण कर रहा है?
- इसे रोकने के लिए क्या किया जा सकता है?

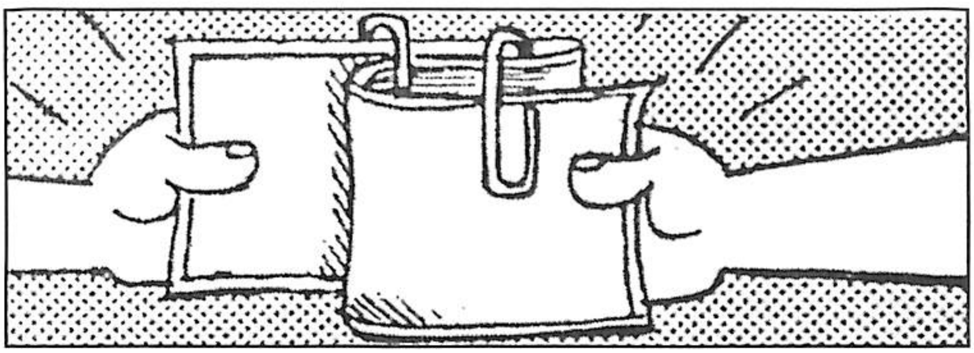


लो! कहाँ से बात शुरू हुई थी
और कहाँ तक पहुँच गयी?
तो? मानते हो न?
घास में भी है कुछ खास!

साभार - नेचर फाइल सीरीज़



तुम भी आजमाओ...



इस बहुत ही आसान खेल के लिए तुम्हें कागज़ में लगने वाले दो यू पिन और मोटे से कागज़ की एक पट्टी की ज़रूरत पड़ेगी। कागज़ की पट्टी थोड़ी कड़क हो तो फिर कहना ही क्या। सबसे पहले कागज़ की पट्टी को अँग्रेज़ी के एस अक्षर के आकार में मोड़ लो। अब चित्र में दिखाए अनुसार कागज़ की दो पट्टियों पर यू पिनें लगा दो। बस जब पिन फँस जाएँ तो पट्टी के दोनों छोरों को पकड़कर खींच दो। यह खींचना एक ही झटके में हो जाना चाहिए। ज़रा करके देखो क्या होता है।
और हाँ, सोचना ऐसा क्यों हुआ?



कोल्हू से घोड़ा

हरदेवसिंह धीमान

एक मुसाफिर घोड़े पर चढ़कर कहीं जा रहा था। उसे प्यास लगी। वह पानी की खोज में इधर-उधर देखता रहा। रास्ते में एक कोल्हू था। उसने घोड़ा कोल्हू में बाँध दिया और स्वयं पानी पीने बस्ती में चला गया।

उसी समय कोल्हू का मालिक उधर से निकला। अपने कोल्हू में घोड़ा बँधा देख वह बहुत खुश हुआ। उसने सोचा चलो मुफ्त में घोड़ा मिल गया। खुश होता भी क्यों नहीं, वह लालची व बेईमान जो था, अन्यथा वह ऐसा सोचता ही क्यों? वह घोड़ा लेकर अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद वह मुसाफिर वापिस आ गया। अपने घोड़े को वहाँ न पाकर वह परेशान हो उठा। कुछ देर सोच-विचारकर वह घोड़े के पदचिन्हों का अनुसरण करता हुआ उसी ओर चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर उसे घोड़े सहित कोल्हू का मालिक मिल गया। उसने बड़ी विनम्रता से पूछा- "भाई, मेरा घोड़ा तुम कहाँ से ला रहे हो?" कोल्हू वाले ने बड़ी धृष्टता से कहा- "इसे तो मेरे कोल्हू ने जना है। यह तुम्हारा कहाँ से हो गया?"

मुसाफिर ने कहा- "भले आदमी, काठ का कोल्हू घोड़ा नहीं जन सकता। यह घोड़ा मैंने अभी थोड़ी देर पहले इस कोल्हू से बाँधा था और स्वयं पानी पीने बस्ती में चला गया था। इसलिए तुम मेरा घोड़ा लौटा दो। अन्यथा मैं तुम्हारी शिकायत राजा से करूँगा।" परन्तु कोल्हू वाले ने मुसाफिर की एक न सुनी और घोड़ा लेकर अपने गाँव चला गया।

अब बेचारा मुसाफिर क्या करता? वह उदास मन से राजा के दरबार में जा पहुँचा। राजा ने दोनों पक्षों को सुनकर फैसला दिया कि मुसाफिर को कोल्हू से घोड़ा बाँधते किसी ने नहीं देखा। हो सकता है वह झूठ बोल रहा हो, इसलिए

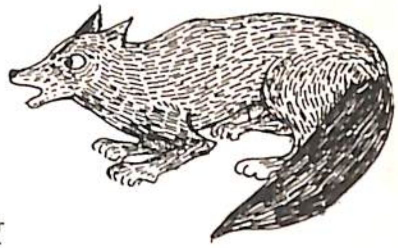


घोड़ा कोल्हू वाले का ही हुआ, जो कि उसके कोल्हू ने ही जना है। राजा के इस फैसले से मुसाफिर हताश हो गया। राजा ने कहा कि यदि उसे किसी ने कोल्हू से घोड़ा बाँधते हुए देखा हो तो उसे गवाह के रूप में अदालत में पेश कर सकता है अन्यथा घोड़ा कोल्हू वाले का ही होगा।

दुखी नन से मुसाफिर गवाह की खोज में निकल पड़ा। रास्ते में मिलने वाले पेड़-पौधे, पशु-पक्षी व आदमियों से पूछता हुआ वह चला जा रहा था। परन्तु किसी ने उसे कोल्हू से घोड़ा बाँधते हुए नहीं देखा था। जिन्होंने देखा था वो भी राजा की मूर्खता के सामने कुछ बोलने को तैयार न थे। मुसाफिर थककर चूर हो गया और एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। दुखी तो वह था ही ऊपर से थकावट। उसे शीघ्र ही नींद लग गई। जब नींद खुली तो बहुत-सा समय बीत गया। वह उठकर ज्यों ही चलने लगा उसे एक सियार भागता हुआ दिखाई दिया। उसने सियार से ही गुहार लगाई कि वह उसकी गवाही देकर उसका घोड़ा वापिस दिला दे। मुसाफिर की गुहार सुनकर सियार उसकी गवाही देने को तैयार हो गया।



निर्धारित समय पर मुसाफिर अपने गवाह सियार सहित राजा के दरबार में हाज़िर हुआ। कोल्हू वाले को भी बुला लिया गया। राज दरबार में पहुँचकर सियार एक जगह पर दुबककर बैठ गया और ऊँघने लगा।



दरबार में सियार को ऊँघता देखकर राजा क्रोधित हो गया। उसने सियार से भरे दरबार में ऊँघने का कारण पूछा। सियार ने बड़े विनम्र स्वर में कहा- "राजन! अपराध माफ करो। मैं एक विचित्र स्वप्न देख रहा था।" राजा ने कहा- "दिन में ही स्वप्न, वह भी राज दरबार में! तुम्हें इसकी सजा दी जाए उससे पहले तुम इस स्वप्न के बारे में बताओ।"

सियार ने डरते हुए कहा- "महाराज, मैंने स्वप्न में देखा कि एक बहुत ही बड़ा समुद्र था जिसमें कई प्रकार के समुद्री जीव व तरह-तरह की मछलियाँ थीं। अचानक उस समुद्र में आग लग गई। समुद्री जीव जन्तु व मछलियाँ अपनी-अपनी जान बचाने तट पर लगे वृक्षों पर चढ़ने लगे....।" वह बोल ही रहा था कि राजा ने रोक दिया। "अरे मूर्ख! समुद्र में कहीं आग लग सकती है? और मछलियाँ तथा समुद्री जीव पेड़ पर चढ़ सकते हैं? तुझे सज़ा ज़रूर मिलेगी।" इससे पहले कि राजा कोई सज़ा सुनाए, सियार ने कहा- "अपराध क्षमा हो महाराज। यदि समुद्र में आग नहीं लग सकती, तो काठ का कोल्हू घोड़ा कैसे जन सकता है? यह तो सरासर मुसाफिर के साथ अन्याय है।"

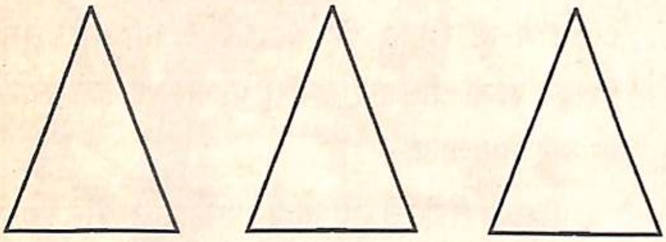


राजा को सियार की बात समझ में आ गयी और उसने मुसाफिर को उसका घोड़ा वापस दिलवा दिया। साथ ही उसे कोल्हूवाले से हर्ज़ाना भी दिलवाया। ●

माथा पच्ची

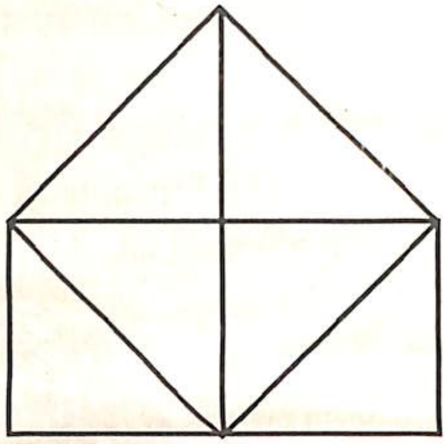


1



इन तीन त्रिभुजों को ऐसे जमाओ कि वे पाँच त्रिभुज बन जाएँ?

2



पेंसिल को बिना उठाए और किसी लाइन पर बगैर दुबारा जाए क्या इस चित्र को बना सकते हो?

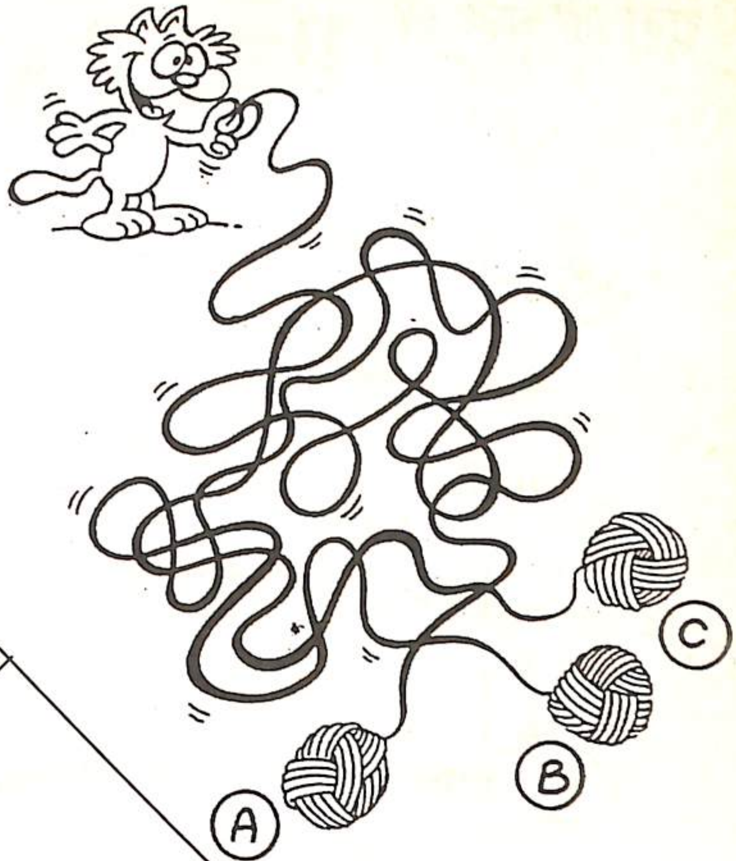
3



इस आकृति का एक हिस्सा गिर गया है। क्या दिए गए इन पाँच टुकड़ों में से सही टुकड़ा ढूँढ कर लगा सकते हो?

4

ज़रा ढूँढ कर तो बताओ इन महाशय ने किस नम्बर का धागा पकड़ रखा है?

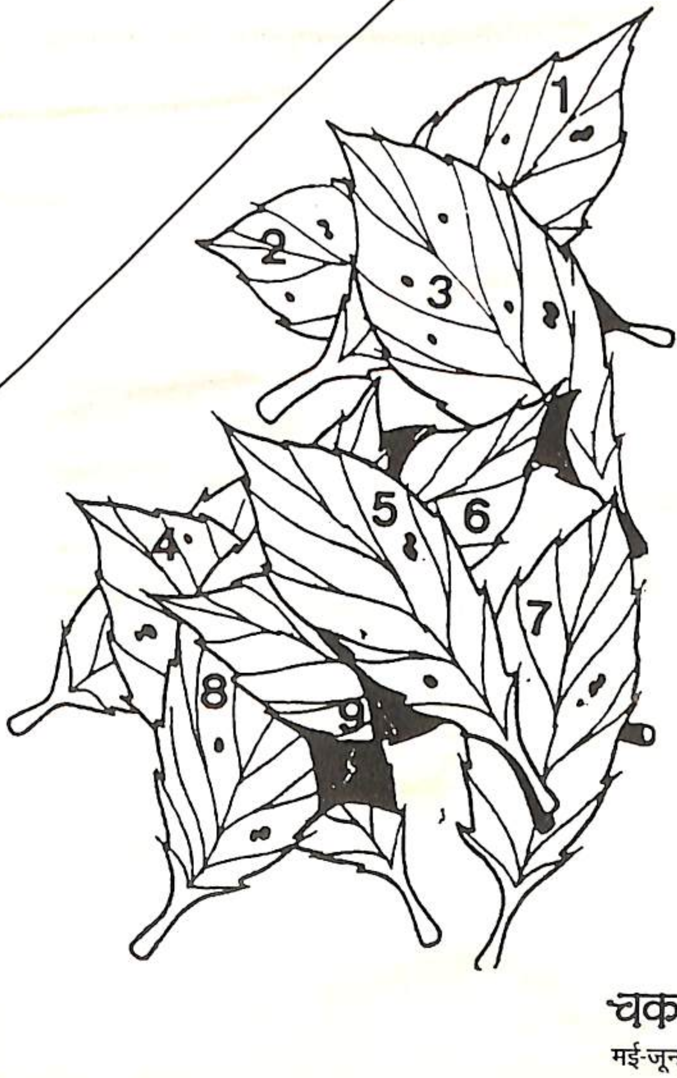


5

9 को किससे गुणा करें कि गुणनफल के सभी अंक समान हों।

जैसे 11 को 3 से गुणा करने पर 33 आता है।

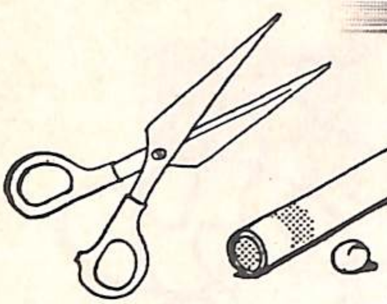
6



एक-एक कर इन पत्तियों को उठाना है। पर एक बात ध्यान रखना है कि क्रम कुछ ऐसा हो कि एक पत्ती को उठाने पर कोई दूसरी पत्ती न खिसके? हर पत्ती का अपना नम्बर है।

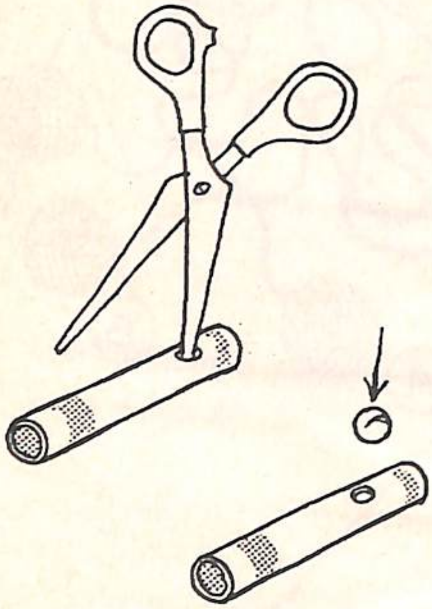
ज़रा बताओ तो नम्बर के हिसाब से उन्हें किस क्रम में उठाना चाहिए?

हवा में मटर



ज़रूरी चीज़ें

धागे की गत्ते वाली रील और एक मटर का दाना।



बनाने का तरीका

चित्र में दिखाये अनुसार गत्ते की रील में एक छेद बनाओ।

अब छेद पर एक मटर का दाना बेर की गुठली या उसी तरह का कोई हल्का और गोल बीज रखो। रील के सामने वाला सिरा अपनी उँगली से बंद कर लो। रील के दूसरे सिरे में अब धीमे-धीमे हवा फूँको। देखो, कैसे उठा मटर का दाना कुछ देर में हवा में टँगा रह गया।

करो

धागे की रील की जगह तुम किसी भी और नली को काम में ला सकते हो।

नली के एक सिरे को कागज़ से बंद करके देखो। मटर के दाने की जगह एक टेबल टेनिस की गेंद प्रयोग करके देखो।

अपने मित्र के साथ यह खेल खेलो। देखो तो कौन मटर के दाने को देर तक हवा में रख पाता है।

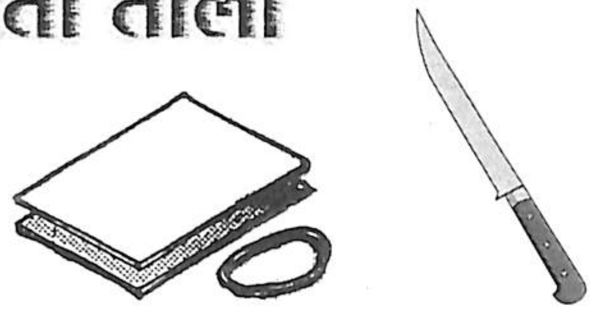


जाँचो परखो

तुम अधिक से अधिक कितनी देर तक दाने को हवा में टँगा सकते हो?

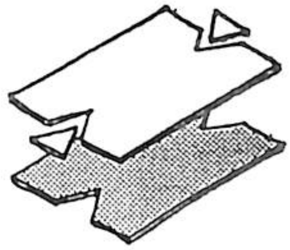
आँखें बन्द करते ही मटर का दाना नीचे क्यों गिर जाता है? बहुत ज़ोर से फूँकने पर भी मटर का दाना गिर क्यों नहीं जाता है?

हवा में बजती ताली



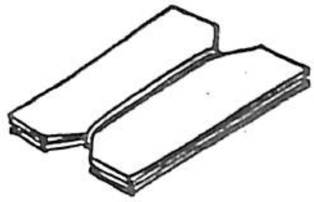
ज़रूरी चीज़ें

6 से. मी. गुणा 5 सें.मी नाप के गत्ते के दो टुकड़े, एक चाकू और एक रबर बैंड।



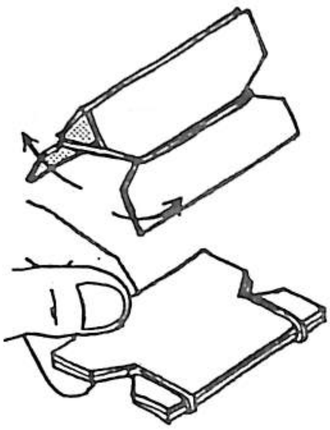
बनाने का तरीका

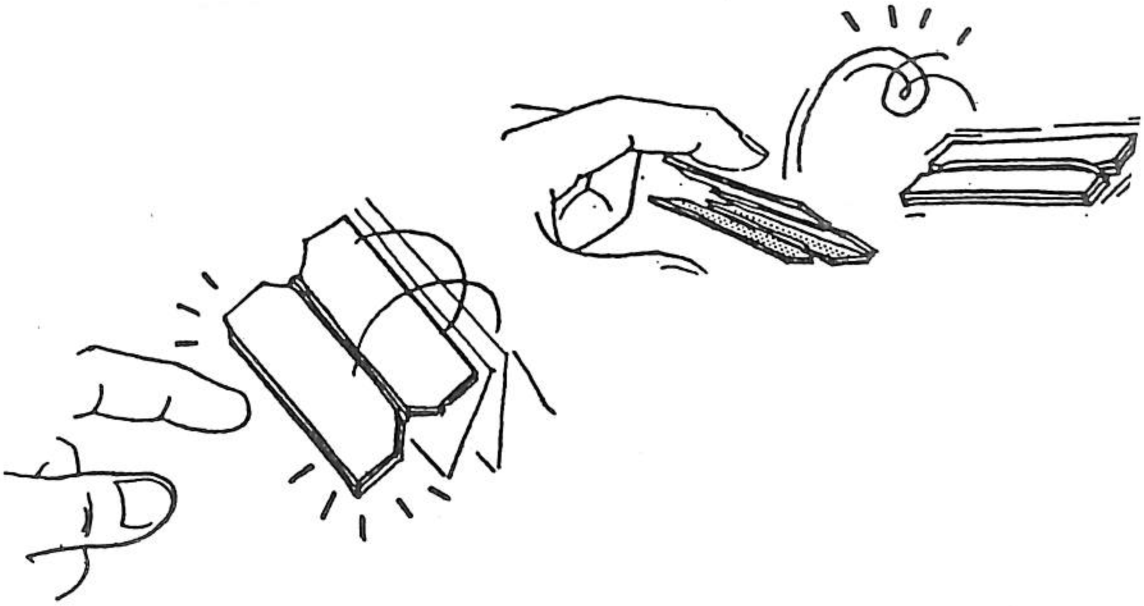
दोनों गत्तों में दिखाये अनुसार V आकार के खाँचे काटो।



एक रबर बैंड को दोनों गत्तों के खाँचों में फँसाओ।

अब इन गत्तों को खोलकर पीछे की ओर मोड़ो, मानो कोई किताब उल्टी दिशा में मोड़ी गयी हो, और हवा में उछाल दो। हवा में उछालने से एक ताली बजने की आवाज़ आयेगी। तुम चाहो तो इस खिलौने को मोड़कर मेज़ पर रख दो। ऐसा करने से खिलौना अपने आप ऊपर को उछलेगा।



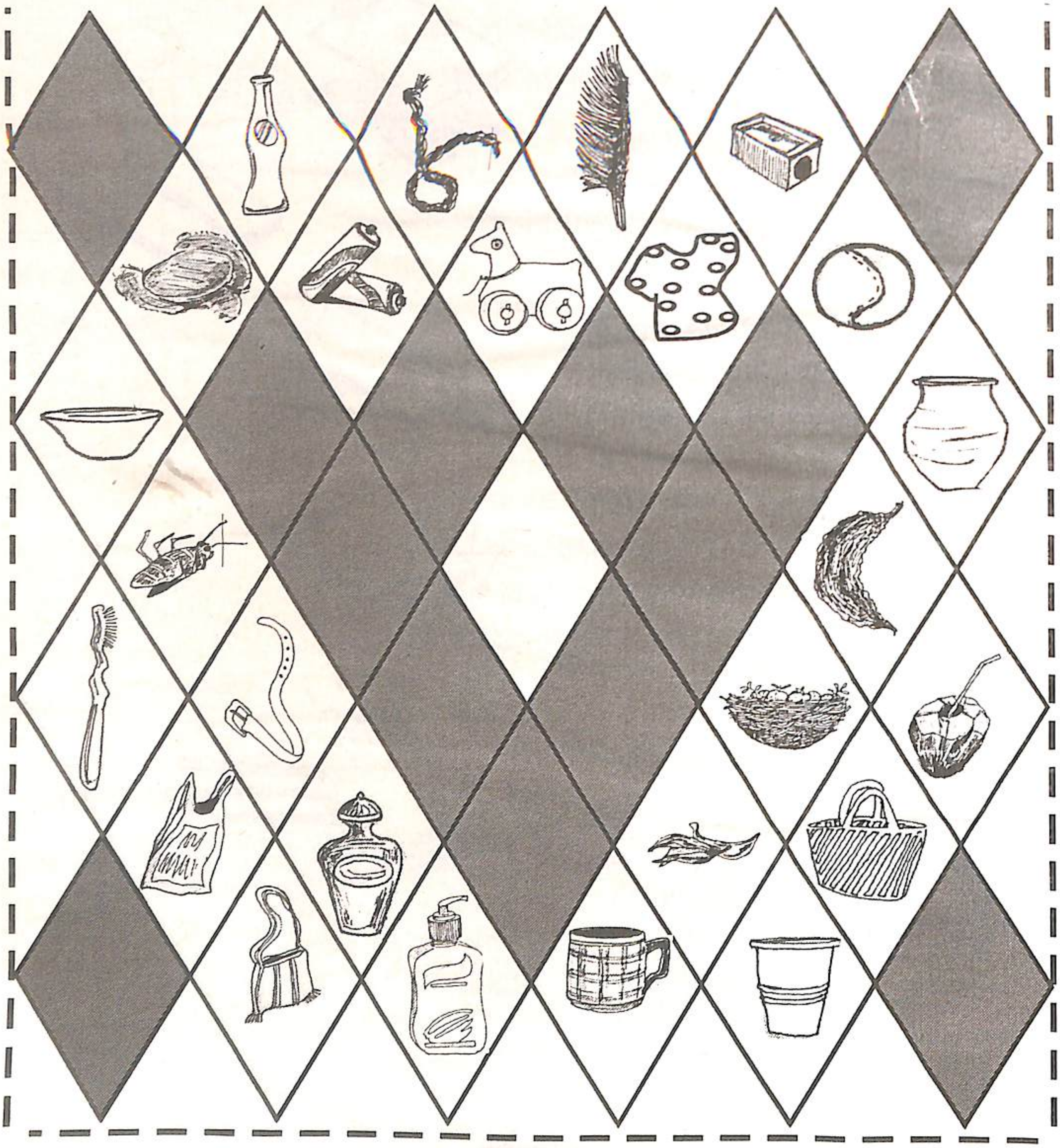


ए क स वा ल

एक दिन में तुम कितने तरह की चीज़ों का उपयोग करते हो? सौ? ..पचास? या ...।

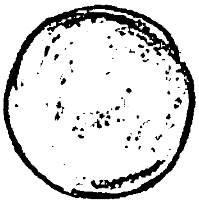
ज़रा अंदाज़ा लगाओ। कुछ को इस्तेमाल करने के बाद हम फेंक देते हैं। फेंकी हुई इन चीज़ों में कई ऐसी होती हैं जो कुछ महीनों में ही सड़-गल कर मिट्टी में मिल जाती हैं। और कुछ सालों तक यूँ ही पड़ी रहती हैं। इनके पड़े रहने से हमें कई तरह से नुकसान होता है। इनमें से कुछ से हानिकारक गैसें निकलती हैं। कुछ ज़मीन को बंजर कर देती हैं। महानगरों में ऐसे कचरे से नालियाँ जाम हो जाती हैं और अच्छी खासी बाढ़ आ जाती है। यह तो अकसर सुनने में आता है कि फलाँ मवेशी की मौत ढेर सारी पॉलीथीन खाने की वज़ह से हुई है।

यहाँ कुल पच्चीस चीज़ें दी हैं। क्या तुम बता सकते हो कि इनमें से कितनी चीज़ें आसानी से मिट्टी में मिल जाती हैं। चाहो तो अपने दोस्तों, आसपास के बड़ों को भी इस चर्चा में शामिल कर सकते हो।



कविता जापान से

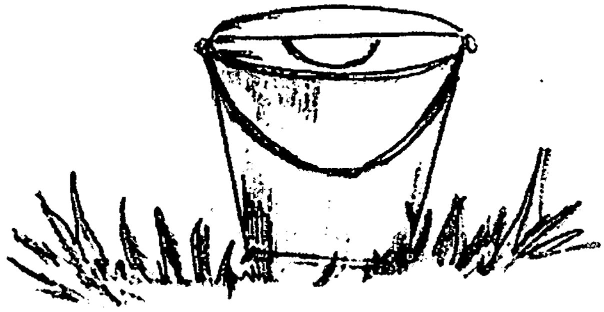
ये हैं हाइकू। हाइकू तीन लाइन की जापानी कविता है। जैसे हिन्दी में दोहा और चौपाई लोकप्रिय हैं वैसे ही जापान में हाइकू। यहाँ जो हाइकू दी जा रही हैं उनकी रचना सत्रहवीं और शुरूआती अठारहवीं सदी में हुई है।





मैंने चंद्रमा को उठाया
अपनी पानी की बाल्टी में
और घास पर उड़ेल दिया।•

- रू हो



नदी किनारे के पेड़
क्या तुम्हारे फूलों के अक्स
सच में बह जाते हैं?•

- बुसान

क्या शानदार दिन है
पूरे गाँव में कोई भी
कुछ नहीं कर रहा।•

- शिके







मेरे छोटे-से गाँव में
मक्खियाँ भी नहीं डरतीं
बड़े आदमी को काटने से।•

- इस्सा

एडवर्ड जेनर

शुक्राचार्य

प्यारे बच्चो, क्या तुम उस डॉक्टर/वैज्ञानिक का नाम बता सकते हो जिसके काम/खोज की वजह से दुनिया में सबसे ज़्यादा लोगों की जानें बची हैं? उसका नाम एडवर्ड जेनर था। इस इंसान ने उस बीमारी को दूर करने का उपाय खोजा था जिसे लोग भगवान का शाप समझते थे। इसने उस बीमारी का टीका खोजा था जिसे लोग अपने इस जन्म या पूर्व जन्म के पाप का फल समझते थे। तुम समझ गए होगे कि मैं चेचक की बात कर रहा हूँ, जिसे आज भी भारत के कई हिस्सों में अंधविश्वास की वजह से बड़ी माता के नाम से जाना जाता है।

एडवर्ड जेनर का जन्म इंग्लैण्ड के बर्कले नाम के गाँव में 17 मई के दिन हुआ था। वह बचपन से ही गाँव में ही रहा। उसे गाँव के हरे-भरे माहौल से बड़ा प्रेम था। इसके घर के बाकी लोगों ने शहर जाकर बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में पढ़ाई की थी, मगर जब पढ़ाई का मौका आया तो इसने कहा कि बचपन की पढ़ाई तो मैं गाँव में ही करूँगा, और उसके बाद डॉक्टर बनूँगा। घर के लोग नाराज़ तो हुए, मगर बच्चे की इच्छा के सामने उन्हें झुकना पड़ा।

बड़े होने पर जेनर ने ट्रेनिंग पूरी करने के बाद डॉक्टरी शुरू कर दी। बचपन की तरह सारी ज़िन्दगी वे साधारण लोगों से जुड़े रहे। एक दिन उन्होंने गौशालाओं में काम करने वाली लड़कियों को कहते सुना कि उन्हें तो चेचक (स्मॉल पॉक्स) कभी हो ही नहीं सकता है, क्योंकि उन्हें गाय को होने वाला चेचक (काऊ पॉक्स) हो चुका है। इस बात पर कोई वैज्ञानिक विश्वास नहीं करता था। मगर जेनर अपने अनुभव से भी यह जानते थे कि मोटे तौर पर यह बात सच है कि गायों का काम करने वाली लड़कियों या गायों का काम करने वाले दूसरे लोगों को यदि गायों को होने वाला चेचक (काऊ पॉक्स) हो जाये तो उन्हें इंसानों वाला चेचक (स्मॉल पॉक्स) नहीं होता है।

आखिर जेनर ने इस बात की जाँच करने की ठानी। उन्होंने अपने प्रयोग शुरू किए। अठारह साल की मेहनत के बाद उन्होंने पता लगाया कि गायों को होने वाले चेचक (काऊ पॉक्स) के विषाणु दरअसल दो तरह के होते हैं। उनमें से सिर्फ एक तरह के विषाणु (वायरस) से प्रभावित इंसानों को चेचक (स्मॉल पॉक्स) नहीं होता है। इसके बाद जेनर ने वह टीका बनाया। उन्होंने सबसे पहले चेचक (काऊ पॉक्स) से प्रभावित एक गाय के थन से थोड़ा-सा पीब निकाला। फिर उसे पूरी तरह से शुद्ध किया। इसके बाद उसे जेम्स फिप्स नाम के एक लड़के को दिया। लड़का कुछ दिनों के लिए काऊ पॉक्स से प्रभावित हुआ। फिर अपने आप ठीक हो गया। उसके बाद उसी बच्चे को स्माल पॉक्स के विषाणु की सूई दी। मगर कई दिन बीत गए और उस बच्चे को कुछ नहीं हुआ। धीरे-धीरे खबर फैल गयी। जल्दी ही सारे इंग्लैण्ड में इस तरीके से टीका बनाया गया। बीच में एक बार टीका देने के बाद भी यह बीमारी कुछ लोगों को हो गयी, तो एक सवाल उठ खड़ा हुआ। मगर जेनर ने सिद्ध किया कि वह टीका ही अशुद्ध था। जेनर के टीका

बनाने का तरीका काफी आसान था। जल्दी ही ये सारे यूरोप में फैल गया।

कम हानिकारक विषाणु को इंसान के शरीर में भेज देने से यह होता है कि शरीर में उस जाति के हानिकारक से हानिकारक विषाणु (वायरस) से लड़ने लायक रस (एण्टीबॉडी) पैदा हो जाते हैं। चूँकि जेनर ने इस टीके को काऊ पॉक्स से प्रभावित गाय के थन से निकाला था और गाय को लैटिन भाषा मे वैक्स कहा जाता है, इसलिए आज भी जब किसी नई बीमारी का टीका निकलता है, उसे वैक्सीन कहते हैं।

प्यारे बच्चो, ऐसा नहीं था कि टीके जैसी कोई चीज़ पहले नहीं थी। विज्ञान में कहावत चलती है 'यदि तुम्हें ऐसा लगता है कि तुमने कोई नई चीज़ खोज ली है तो पहले तुम चीन जाओ, वहाँ तुम्हें उससे मिलती-जुलती कोई चीज़ ज़रूर मिलेगी।' टीके के मामले में भी यही बात थी। जिस गाय को काऊ पॉक्स हुआ था उसके थन में रहने वाले कीड़ों को चीन में लोग कैप्सूल के रूप में खाया करते थे। इस तरीके में अगर कोई वैज्ञानिक कमी थी तो सिर्फ ये थी कि ये कैप्सूल कई बार काऊ पॉक्स के उस विषाणु से पीड़ित गाय के थन के कीड़ों से बने होते थे जो स्मॉल पॉक्स के मामले में कोई असर नहीं दिखा पाते थे और बेअसर रहते थे। इस तरीके की एक और बड़ी कमी ये थी कि यह चीनी समाज के कुछेक राजघरानों तक ही सीमित था। इसके बारे में चीन के सारे डॉक्टर भी नहीं जानते थे। जबकि विज्ञान में सबसे बड़ी बात उसका खुलापन है। कोई भी गोपनीयता या रहस्य विज्ञान की बुनियाद पर चोट करता है और विज्ञान को जल्दी ही नष्ट कर देता है। चीन और भारत में विज्ञान के पतन की या फिर गिरावट की एक बड़ी वजह यही थी।

खुलेपन से याद आया कि जेनर ने टीका बनाने के अपने तरीके का पेटेंट नहीं कराया था। पेटेंट कराने का मतलब था कि यदि कोई दूसरा डॉक्टर उस तरीके से टीका बनाना चाहे तो उसे ऐसा करने से पहले जेनर से इजाज़त लेनी पड़ती और जेनर को पैसा भी देना पड़ता। जेनर का कहना था कि एक तो इससे टीका बनाने में बेकार का बहुत वक्त लगेगा और ये इतना महँगा होगा कि इसका फैलाव बहुत मुश्किल हो जायेगा।



एडवर्ड जेनर

अपनी इस उदारता के चलते जेनर इतने मशहूर हुए कि उनका नाम समूचे यूरोप में फैल गया। इंग्लैण्ड की रानी ने उनका सम्मान किया। राजा से लेकर प्रजा तक में इनके प्रति सम्मान का क्या आलम था, इसका एक नज़ारा तब देखने में आया जब इंग्लैण्ड और फ्रांस के बीच युद्ध चल रहा था। उस समय इंग्लैण्ड की सेना के दो छोटे सेनापतियों को फ्रांस के राजा नेपोलियन के सैनिकों ने पकड़ लिया था। संयोग से वे दोनों जेनर के दूर के सम्बंधी निकले। जेनर ने नेपोलियन से उनको छोड़ने को कहा। इस पर नेपोनियन ने कहा, 'ओह! जेनर! मैं उनकी कोई बात नहीं टाल सकता।' और उसने दोनों सेनापतियों को छोड़ दिया।

तो यह दुनिया के सबसे प्रसिद्ध डॉक्टर के काम के बारे में एक छोटी सी कहानी है। उन्होंने और भी कई काम किए थे, जिसके बारे में तुम फिर कभी पढ़ना। ●

प्यासा कबूतर

आर. के. मूर्ति



गर्मियों की दोपहर थी। बाग में लगे आम के पेड़ पर एक कबूतर आकर बैठा। उसने एक पका आम देखा। उसने जी भर आम खाया। फिर उसे प्यास लगी।

वह उड़कर बाग में बने ताल तक आया। ताल सूखा पड़ा था। उसके पेंदे में दरार पड़ी थीं। कबूतर उड़कर बाग में लगे नल पर पहुँचा जो हमेशा टपकता रहता था। लेकिन आज नल भी सूखा पड़ा था।

कबूतर को बहुत ज़ोर की प्यास लगी थी। लेकिन पानी कहीं नहीं था। तभी कबूतर को एक बगुला दिखाई दिया। कबूतर ने बगुले से पूछा- "क्या आसपास कहीं पानी मिलेगा?"

"मिलेगा। वह मकान देखते हो? उसके आँगन में एक टूटी सुराही पड़ी है। उसमें पानी है। मैं अभी-अभी उसी से पीकर आया हूँ।" बगुले ने कहा।

"धन्यवाद दोस्त!" कबूतर ने बगुले से कहा और तुरंत उड़कर उस मकान के आँगन में पहुँच गया। वहाँ सुराही भी पड़ी थी और सुराही में पानी भी था, लेकिन पानी बहुत नीचे था। कबूतर ने सब तरह से गरदन टेढ़ी करके पानी तक चोंच पहुँचाने की कोशिश की, लेकिन उसकी चोंच पानी तक नहीं पहुँच पायी। वह हारकर आँगन की मुँडेर पर जाकर बैठ गया।

एक चिड़िया देख रही थी। चिड़िया ने कबूतर से पूछा- "क्या हुआ? पानी नहीं पिया गया?"

कबूतर मुँह दूसरी तरफ घुमाकर बैठ गया। प्यास के मारे उससे बोला तक नहीं जा रहा था।

चिड़िया बोली- "मेरी दादी एक कहानी सुनाया करती थी। कहानी में एक प्यासा कौआ था। उसकी चोंच भी पानी में नहीं डूब पा रही थी। तब उसने क्या किया कि चोंच में कंकड़ उठाकर लाया और..."

"...बोर मत करो!" कबूतर बोला। "यह कहानी मेरी भी सुनी हुई है। पुराने ज़माने की कहानी है। मुझसे नहीं होती इतनी मेहनत। कोई और तरकीब मालूम हो तो बताओ।"

दोनों चुप हो गये।

तभी मकान में रहनेवाली एक बच्ची आँगन में आयी। उसके हाथ में एक पानीवाला नारियल था जिसे वह नली से पी रही थी। नारियल पानी पीकर नारियल की खोल और नली आँगन में फेंककर वह घर के भीतर चली गयी।

कबूतर कुछ देर बच्ची को ध्यान से देखता रहा। अचानक उसकी आँखों में चमक आ गयी। वह चिड़िया से बोला- "अब तू देख! नये ज़माने की कहानी।"

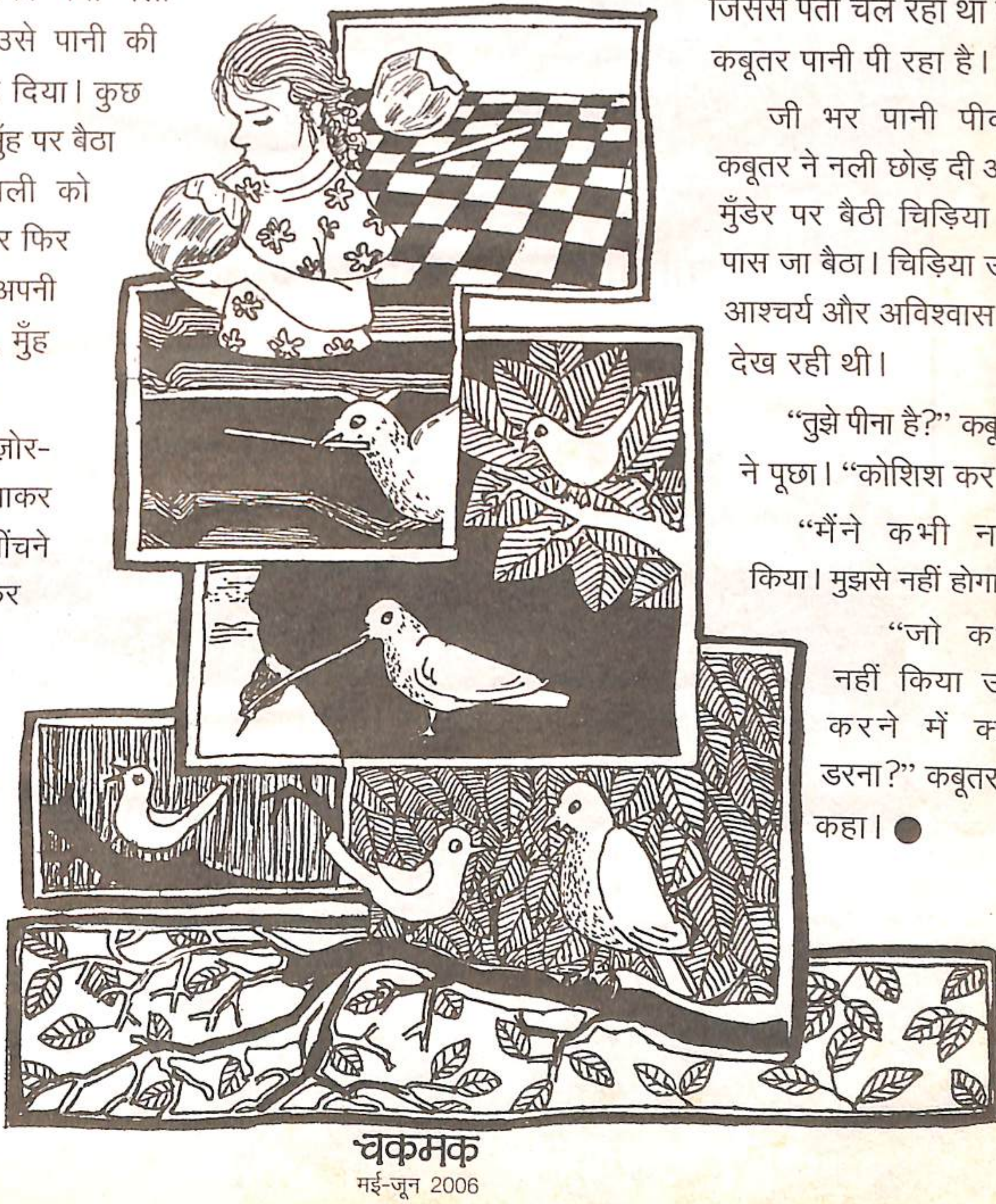
कबूतर आँगन में उतरा। उसने अपनी चोंच में बच्ची द्वारा फेंकी गयी नली उठायी और उसे पानी की सुराही में डाल दिया। कुछ देर सुराही के मुँह पर बैठा घूम-घूमकर नली को देखता रहा और फिर उसने नली को अपनी चोंच खोलकर, मुँह में दबा लिया।

अब वह ज़ोर-ज़ोर से पेट फुलाकर नली से पानी खींचने की कोशिश कर रहा था, जैसा कि बच्ची कर रही थी। लेकिन हो यह रहा था कि उसकी गरदन तो ऊपर उठ रही थी, गरदन के साथ नली भी, लेकिन पानी नली में नहीं चढ़ रहा था।

चिड़िया हँसने लगी। बोली- "तू क्या आदमी है? छोड़ उस नली को और कंकड़ ला पानी पीना हो तो।"

लेकिन कबूतर ने अपनी कोशिश जारी रखी।

कुछ ही देर में नली में पानी भर गया और ज़रा-सा ऊँची गरदन करते ही पानी कबूतर के मुँह में आने लगा। उसका टेंटुआ ऊपर नीचे होने लगा जिससे पता चल रहा था कि कबूतर पानी पी रहा है।



जी भर पानी पीकर कबूतर ने नली छोड़ दी और मुँडेर पर बैठी चिड़िया के पास जा बैठा। चिड़िया उसे आश्चर्य और अविश्वास से देख रही थी।

"तुझे पीना है?" कबूतर ने पूछा। "कोशिश कर।"

"मैंने कभी नहीं किया। मुझसे नहीं होगा।"

"जो कभी नहीं किया उसे करने में क्या डरना?" कबूतर ने कहा। ●

चकमक के दाम बढ़ रहे हैं

कागज़ के दामों में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण हमें चकमक के दाम बढ़ाने पर विवश होना पड़ रहा है।

जुलाई 2006 से चकमक के दाम इस प्रकार होंगे -

एक प्रति : 15.00 रुपए

वार्षिक : 150.00 रुपए

तीन साल : 350.00 रुपए

आजीवन : 1500.00 रुपए

जुलाई से पहले वार्षिक/आजीवन ग्राहक पुराने दामों पर ही बन सकते हैं।

इससे पहले चकमक के दाम में वृद्धि सन् 1999 (जुलाई) में की गई थी।

चकमक में विज्ञापन की दरें

पिछला कवर (रंगीन)	15000/- प्रति अंक
भीतरी कवर (रंगीन)	10000/- प्रति अंक
भीतर पृष्ठ (श्याम-श्वेत)	5,000 प्रति अंक
स्पॉन्सरशिप पट्टी	1000/- प्रति पेज

साड़ियों से चित्रकारी



पत्तियों से चित्र









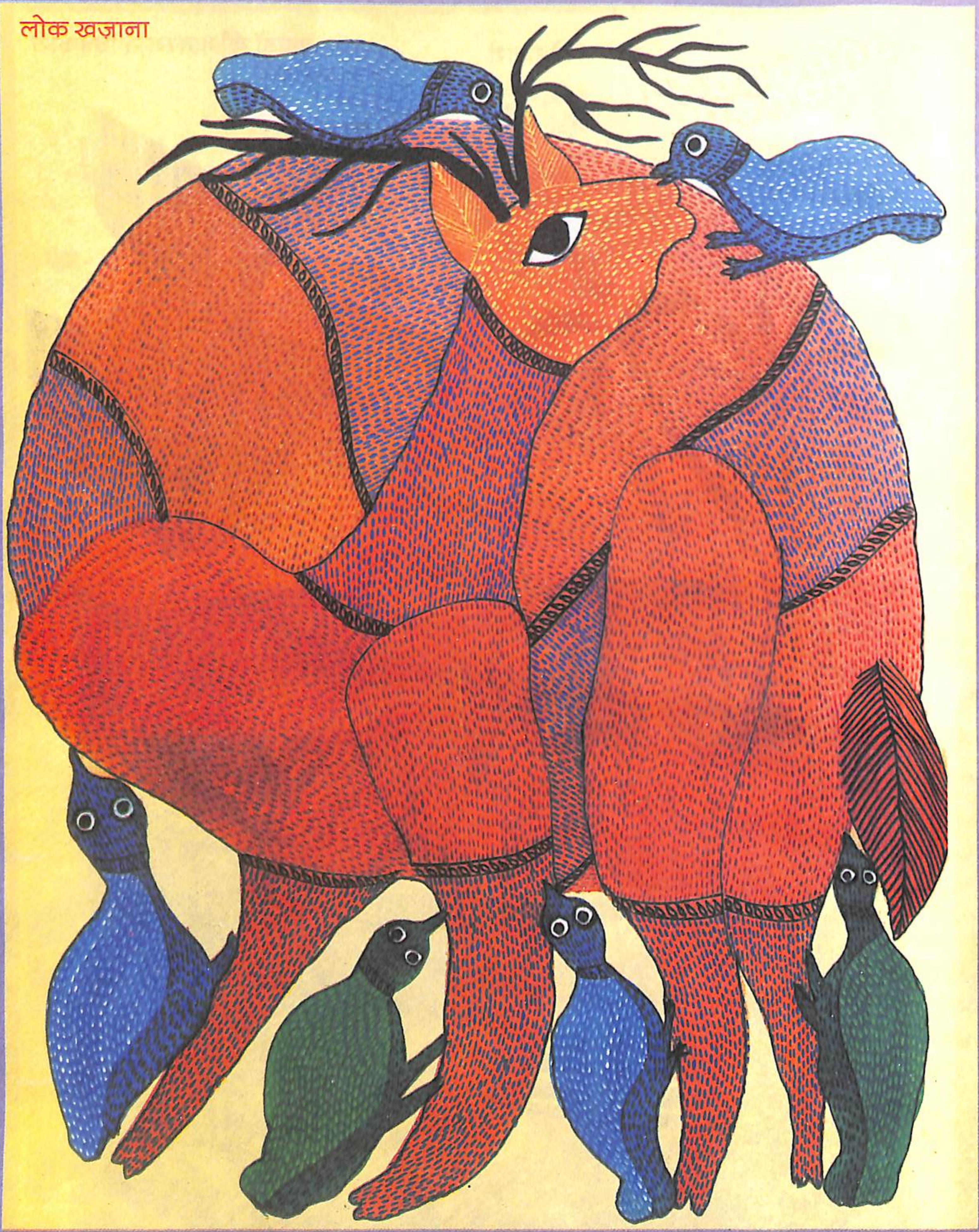
सब्ज़ियों से चित्रकारी

कपड़ों की कतरन से चित्रकारी





कपड़ों की कतरन से चित्रकारी



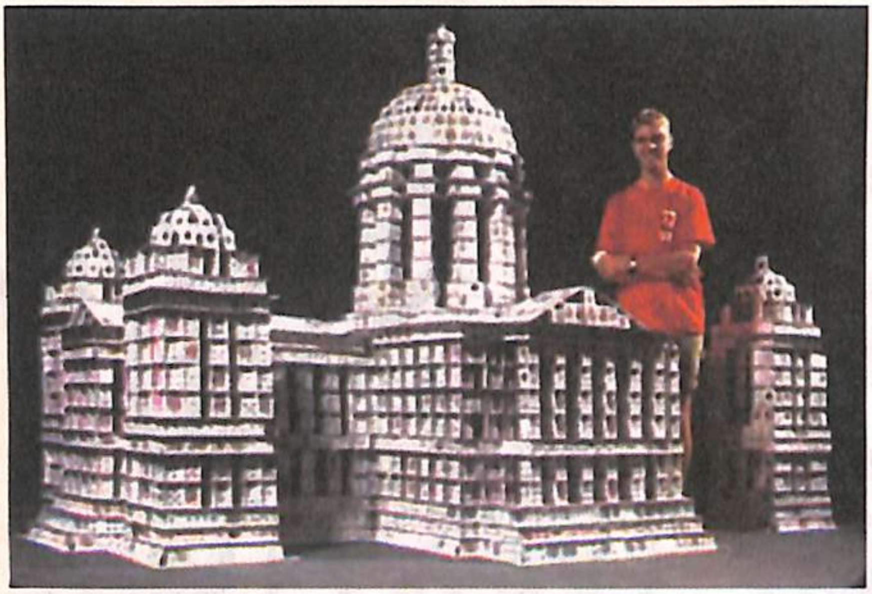
कुछ चिड़ियाँ दाना चुगने जा रही थीं। रास्ते में उन्हें एक हिरण दिखा। उसने चिड़ियों से कहा कि मेरे शरीर में बहुत जूँ हो गई हैं। क्या तुम उन्हें बीन दोगी? चिड़ियाँ तैयार हो गईं।

कहानी एवं चित्र – दुर्गाबाई

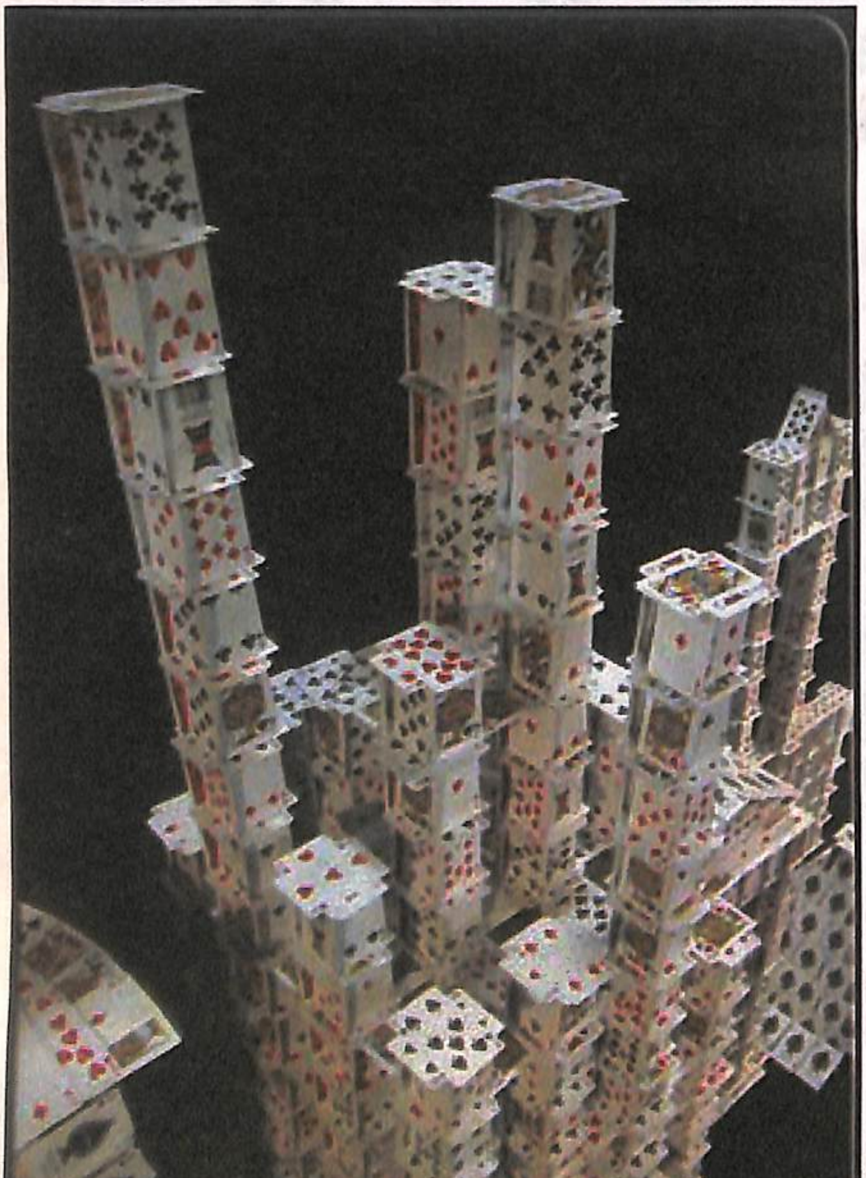


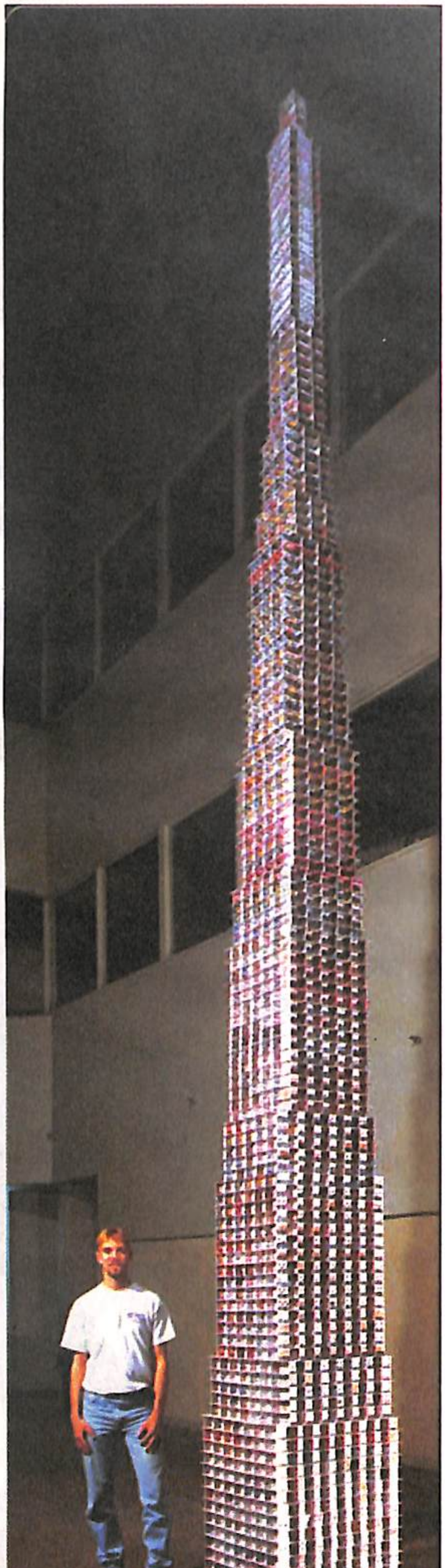
एक बारहसिंगा जंगल में खड़ा था। उसके ऊपर से एक दिन चिड़ियों का झुण्ड गुज़रा। उन्होंने बारहसिंगे को पेड़ समझा और उसके सींगों को शाखें समझकर उन पर बैठ गए।

कहानी एवं चित्र – दुर्गाबाई



ताश के महल

















रवीन्द्रनाथ टैगोर

देश की माटी, देश का जल
हवा देश की देश के फल
सरस बनें प्रभु सरस बनें

देश के घर और देश के घाट
देश के वन और देश के बाट
सरल बनें प्रभु सरल बनें

देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई बहन
विमल बनें प्रभु विमल बनें

रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस सुप्रसिद्ध कविता का मशहूर
कवि भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा किया गया रूपांतर

इस पार है उस पार है

राजेंद्र शर्मा

बस से उतरते ही पी सी ओ दिखाई दिया। लपक कर अम्मा को फोन करने की इच्छा हो आई। अम्मा प्रणाम। मेरे सामने ही वाघा बार्डर है। पार करते ही पाकिस्तान में पहुँच जाऊँगा। अम्मा की काँपती सी आवाज़ सुनाई देती है - ठीक है बेटा। अपना ध्यान रखना। फोन करना। अम्मा ने फोन रख दिया। अस्सी साल की अम्मा। घबराती है तो बात करना बन्द कर देती है। मैं पाकिस्तान जा रहा हूँ, इसमें घबराने की क्या बात है भला। अम्मा सोचती है - पाकिस्तान। एक दुश्मन देश। वहाँ उसके बेटे से जाने कैसा सलूक हो। और ऐसा सोचने वाली अम्मा अकेली नहीं है। दफ्तर के सहकर्मी, निकट परिजन, दोस्त, बहनें... सभी ने ऐसा ही तो कहा। मेरी पाकिस्तान यात्रा उनके लिए अजूबा भी है और शंका-कुशंका की वजह भी।

वाघा में इस पार भारतीय और उस पार पाकिस्तानी कस्टम्स पर तीन-तीन इम्मीग्रेशन काउन्टर हैं। इंडियन्स, पाकिस्तानीज़ और फॉरेनर्स। हम भारतीयों के काउन्टर पर खड़े हैं। चंद्रकांत देवताले (मशहूर कवि) मेरे साथ हैं। मैंने उन्हें काउन्टर का यह विभाजन दिखाया तो बोले- ठीक ही तो है। हम भारतीय या पाकिस्तानी ज़रूर हैं पर एक दूसरे के लिए विदेशी तो नहीं।

इस पार से उस पार तक जाने में दो घण्टे लगे। रास्ता- कुल आधा किलोमीटर। पैदल ही पार करना पड़ा। सामान लिए हुए भारतीय कुली साथ था। उस पार पाकिस्तानी कुली ने सँभाल लिया। पाकिस्तान कस्टम्स पर फिर वैसा ही इम्मीग्रेशन काउन्टर। हम भारतीय यात्री अपने पासपोर्ट दे रहे हैं। सामान बगल के कमरे में एक मेज़ पर रखा है। एक अधिकारी आकर 'खुशआमदीद' कहता है। पूछता है- आप सभी शायर और अदीब हैं? रौबदार चेहरा है। झटके से एक बैग की चेन खोलता है। और खोल कर बंद कर देता है। कहता है - 'जाइये।' हम पासपोर्ट बटोरने दौड़ पड़ते हैं।

करांची को हमारी मुम्बई की माँ कहा जाता है। दोनों ही पुराने व्यापारिक बंदरगाहों के शहर हैं। पर कराची, मुम्बई से भी पुरानी है। यह पाकिस्तान के सिंध सूबे की राजधानी है। हमारे शहरों की तरह ही यहाँ भी खूबसूरत बच्चे हैं। स्कूल जाते प्यारे-प्यारे मासूम बच्चे। चाय की होटलों, ढाबों, मोटर वर्कशाप पर काम करते मेहनती बच्चे। ज़्यादातर पठानी ढंग का शलवार कुर्ता पहने बच्चे। कूचों में क्रिकेट खेलते और बाज़ारों में बजा-बजाकर बाँसुरी बेचते बच्चे।

कराँची के 'कूचा-ए सकाफ़त' (संस्कृति की गली) में जब हम मास्टर हमीद से मिले तो जाने कैसे प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की याद आ गयी। ईद के मेले में एक छोटा-सा बच्चा। बच्चों की टोली में। अपनी जेब में रखे दो पैसे बार-बार सँभालता। साथियों की मौज-मस्ती के बीच अपनी बूढ़ी दादी को याद करता हमीद मिठाई-खिलौनों के सहज आकर्षण के बावजूद दादी के लिये अपने सारे पैसों से एक चिमटा खरीदता

है। चूल्हे में रोटी सेंकते-सेंकते उसकी दादी की उंगलियाँ जल जाती थीं। बाकी बच्चों के मिठाई-खिलौने घर पहुँचते-पहुँचते खत्म हो चुके थे पर हमीद का चिमटा, जो कभी सिपाही की बंदूक था और कभी फकीर का बाजा, दादी के हाथों को बिना जलाये चूल्हे से गर्म-गर्म रोटियाँ निकालकर हमीद को हमेशा खिलाता रहा।

गरीबी में जीने को मजबूर एक बच्चे का जीवन के प्रति प्यार और इसी प्यार के भरोसे जीवन को जीने का साहस! यही तो उस एकपात्रीय नाटक की भी कहानी थी जिसे दस-बारह बरस के मास्टर हमीद ने उस शाम पेश किया। कराँची में दिसंबर की एक शाम हो रहा यह नाटक पिछले ही अक्टूबर में उत्तरी कश्मीर में, भारत-पाकिस्तान दोनों ही ओर आये भूकंप और उसकी भयानक तबाही की कथा कह रहा था। भूकंप के बाद मास्टर हमीद मुजफ्फ़राबाद से अपने परिवार के साथ रोज़ी-रोटी की तलाश में कराँची चला आया। लोक कलाकारों के इस परिवार के लिए नाटक ही रोज़ी-रोटी है। वे यहाँ भी वही कर रहे हैं। मास्टर हमीद की छोटी बहन उसी मंच पर ठंड से बचने की कोशिश में एक फटी-सी चादर ओढ़े गुड़ी-मुड़ी एक कोने में अपने भैया को अभिनय करते देख रही है। मंच के नीचे वाद्य यंत्रों को सँभालते उसका बाकी परिवार।



डॉ. कमलाप्रसाद तथा अन्य भारतीय लेखकों का 'दाहर के राजा' द्वारा स्वागत

कूचा-ए-सकाफ़त, कोई कूचा या गली नहीं है। कराची में यह एक बहुत चौड़ी सड़क के दोनों ओर फैला खूब लम्बा-चौड़ा मैदान है। यहाँ हर शाम एक मेला लगता है। मेले में ढेरों लोक कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं। खाने-पीने की ढेरों दूकानें हैं। गुब्बारे और बाँसुरी बेचते दर्जनों फेरी वाले घूमते रहते हैं। मेले में जुटे हज़ारों लोग अपने बच्चों की उंगली पकड़े आते हैं। बच्चों को खिलौने-गुब्बारे दिलाते हैं। चाट-मिठाई खिलाते हैं। सकाफ़त का मतलब संस्कृति है। यही हमारी संस्कृति है। मेलों में घूमते, लोक गीतों को सुनते, लोक नाट्यों को देखते, लोक शिल्पों को देखते, गाते, नाचते ही हम संस्कृति का मतलब समझते हैं। और जीवन का भी।

सिंध ही वह सूबा है, जहाँ भारत पर विदेशी लुटेरों ने पहला हमला किया। पहला हमलावर अरब का मुहम्मद बिन कासिम था। उस वक्त सिंध का राजा दाहर था। कूचा-ए-सकाफत में हम भारतीय लेखकों के प्रतिनिधि मंडल का स्वागत राजा दाहर के सैनिकों की वेशभूषा में सजे लोक-कलाकारों ने किया। वे राजा दाहर का फ़रमान सुना रहे थे। सबक़ी मज़हबी आज़ादी का फ़रमान। हमलावरों से बहू-बेटियों के बचाव का ऐलान। ढोल ढमाकों के बीच उठती इस सिंधी लोक गीत की धुन में जादू था। पास ही सिंध की मशहूर चादरें बिक रही थीं। इन चादरों को अज़रक कहते हैं।

बहुत सारी संस्कृतियों को अपने में समेटे, और इनके बीच शताब्दियों से अपना लेना-देना करते एशिया महाद्वीप के इस हिस्से में सिंध की संस्कृति सबसे पुरानी है और इसे ही हम सिंधु घाटी की

सभ्यता के नाम से जानते हैं। मोइन-जो-दड़ो यहीं है। (यह सिंधी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है मुर्दों का टीला)

कराची से सड़क मार्ग पर लाहौर जाते हुए पहले जामशोरो आता है। फिर शेवण शरीफ और फिर मोइन जो-दड़ो। जामशोरो में पैंसठ हज़ार एकड़ में फैली सिंध युनिवर्सिटी है। पढ़ने-पढ़ाने के इस विशाल केंद्र में दुनिया भर में फैली ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं के अध्ययन की सुविधा है। मेडिकल, इंजीनियनिरंग, एग्रीकल्चर कॉलेज। इतिहास, समाज विज्ञान और भाषा अध्ययन के बड़े-बड़े संस्थान। लगभग पचास हज़ार विद्यार्थियों अध्यापकों का समूह यहाँ हर समय रहता है। हरे-हरे वृक्षों से भरा-पूरा यह परिसर मुझे अपने शांति निकेतन सा लगा।

शेवण शरीफ़ में लाल शहबाज़ कलंदर की दरगाह है। 'दमादम मस्त कलंदर' वाला गीत इन्हीं की शान में गाया जाता है। हमारे अजमेर शरीफ़ की तरह यहाँ भी लाखों श्रद्धालु भक्तों की भीड़ लगी रहती है। सूफी भक्ति संगीत से रची-बसी कव्वालियाँ गूँजती रहती हैं। सिंध में इन्हें झूलेलाल साँई भी कहा जाता है। इन्हें जल के देवता वरुणदेव का अवतार माना जाता है। पुराने लोग बताते हैं कि इन्होंने सिंधु नदी के किनारे बसे लोगों को कई आपदाओं से बचाया था। समाज की भलाई में हिंदू-मुसलमान का फर्क न करते हुए इन जैसे सूफी संतों का हर जगह सम्मान किया जाता है। अजमेर वाले ख्वाजा गरीबनवाज़ मोइनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, शिरडी वाले साँईबाबा, नागपुर वाले बाबा ताजुद्दीन। इन सूफी फकीरों - संतों की एक लम्बी परंपरा है। इनकी दरगाहों पर हर बरस लगने वाले उर्स और मेले हमारी मिली-जुली संस्कृति के जीवित उदाहरण हैं। ऐसी दरगाहें हिंदुस्तान - पाकिस्तान और बांग्लादेश के छोटे-बड़े शहरों- कस्बों में अनगिनत हैं। भोपाल के पास ही रायसेन की दरगाह मुझे शेवण शरीफ में याद आयी। शेवण शरीफ की दरगाह में ठोस सोने का बना एक विशाल दरवाज़ा है। एक हाथी की ऊँचाई से भी बड़ा। इसे ईरान के शाह आर्य मिहिर मुहम्मद रज़ा पहलवी ने लगवाया था। अपनी श्रद्धा के केन्द्रों को अपनी हैसियत के मुताबिक चाँदी, धन-दौलत अर्पित करते रहना हमारे समाजों का बड़ा पुराना रिवाज़ है। समाज सेवा के इन केंद्रों के लिए समाज से ही आर्थिक मदद जुटाने की एक तरकीब। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, तिरुपति का बालाजी वेंकटेश्वर मंदिर, सामूहिक लंगर की प्रथा, और जगह-जगह आयोजित भंडारे-अन्नक्षेत्र सभी में इसी रिवाज़ की झलक देखी जा सकती है।

मोइन जो-दड़ो के पुरातत्व संग्रहालय के प्रमुख शम्सुद्दीन जतोई ने हमें बताया कि अब यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत घोषित किये जा चुके इस शहर को सबसे पहले पुणे के पुरातत्वविद डी.आर. भण्डारकर ने सन् 1912 में खोजा था। उनकी तस्वीर संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर ही लगी हुई है।

दस साल तक खुदाई के बाद उन्हें यहाँ एक बौद्धस्तूप मिला जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी यानी आज से कोई 2200 वर्ष पहले का बना था। बाद



राजेन्द्र शर्मा, चंद्रकांत देवताले और नूर ज़हीर मोइन-जो-दड़ो में

में जब और भी खुदाई की गई तो इस स्तूप के नीचे 4500 वर्ष पुराना यह शहर अपने पूरे ढाँचे के साथ मिला। यह दुनिया की सबसे पुरानी नगरीय सभ्यता है। सिंधु नदी के किनारे-किनारे बसी इस सभ्यता के निशान सिंध के मोइन जो-दड़ो से 600 किलोमीटर दूर पंजाब के हड़प्पा तक मिलते हैं। इस शहर में ईंटों से बने घर, सामूहिक स्नानघर, सार्वजनिक पूजा स्थल, चौड़ी-सड़कें, अनाजों का सामूहिक भण्डारघर, दो मंज़िला कुएं, सभी कुछ हैं। किसी बाढ़ या महामारी के चलते साढ़े चार हज़ार वर्ष पहले यह वीरान हो गया। राख के रंग की मिट्टी से बनी ईंटे, बस यही इसके अवशेष हैं। यह पूरा शहर है, बिना छतों का शहर खुले आसमान के तले फैला है। इतना खूबसूरत और अपने शहरियों के लिए इतना सुविधा सम्पन्न कि हमारे आज के शहरों में हो रहे असमान विकास के बीच बनती-बिगड़ती झुग्गी-झोपड़ियों के लिए एक चुनौती है। संग्रहालय के अध्यक्ष ने पाकिस्तान के पर्यटन विभाग का एक दिलचस्प पोस्टर भी हमें दिखाया। मोइन जो-दड़ो के फोटोग्राफ्स के साथ उस पर लिखा था - *प्राचीन भारत देखना हो तो पाकिस्तान आइये।*

लाहौर में अनारकली बाज़ार बड़ा मशहूर है। विख्यात फूड स्ट्रीट यहीं है। रोज़ शाम से सुबह तक हर वक्त लगभग दो किलोमीटर लम्बी यह सीधी सड़क आने-जाने वालों से पटी रहती है। दोनों तरफ खाने-पीने की दूकानें हैं। और लोग रात भर खाते-पीते नज़र आते हैं। औरतें-बच्चे सभी। आपकी फरमाइश पर आपके भोजन के बीच वाद्य संगीत का भी प्रबंध हो सकता है। क्लोरियोनेट या वायलिन। आप किसी भी हिन्दुस्तानी फिल्मी गीत की फरमाइश कर सकते हैं। जब हम वहाँ पहुँचे तो वायलिन पर फिल्म 'आवारा' का गीत बज रहा था - 'घर आया मेरा परदेसी....।' पाकिस्तान के लेखक जमाँ खान से मैंने कहा कि- अनारकली की फूड स्ट्रीट होने से लाहौर में मैक्डोनाल्ड, पिज्जा हट और केंटुकी चिकन जैसे रेस्तरांओं का क्या हाल होगा? जमाँ खान ने एक आह भरते हुए बताया कि 'अपना-अपना स्वाद है। कुछ लोगों को विदेसी भोजन में अपनी हैसियत नज़र आती है। स्वाद नहीं, हैसियत।'

अनारकली से बाहर निकलकर जमाँ खान हमें लाहौर के किले की ओर ले गए। रात में किला बंद था। लेकिन बाहर से भी उसकी विशालता का आभास हो जाता था। किले के बाहर शाही मस्जिद, डॉक्टर सर मुहम्मद इक़बाल का मकबरा, महाराज रणजीत सिंह का बनाया गुरुद्वारा और सिक्ख संग्रहालय भी देखे, पर रात होने की वजह से हम कहीं भी भीतर न जा सके। जमाँ खान ने डीएवी कॉलेज की वह इमारत दिखाई जहाँ भगतसिंह पढ़ा करते थे और जहाँ साण्डर्स पर गोली चलाने के बाद वे भागकर छिपे थे। ●

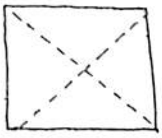


लाहौर का मशहूर अनारकली बाज़ार

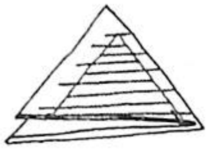
कागज़ की झालर

आवश्यक सामान
- मोटा कागज़ • पेंसिल
- स्केल • पेपर-क्लिप
- कैंची • धागा

1. किसी भी नाप का छोटा या बड़ा वर्गाकार कागज़ लो।
2. कोने से कोना मिलाते हुए इसमें दो मोड़ बनाओ।

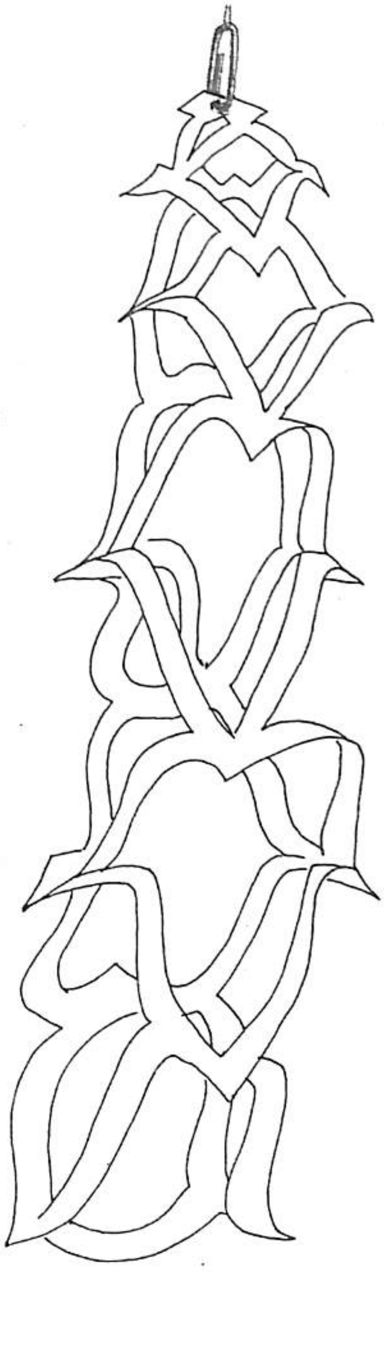


3. खुले सिरे को नीचे रखकर बाएँ और दाएँ सिरों पर चौथाई इंच चौड़ी किनार बनाओ।
4. चित्र में दिखाए अनुसार काटने वाली रेखाएँ खींचो।



5. अब दाएँ सिरे से बाईं किनार तक काटो। फिर बाएँ सिरे से दाईं किनार तक काटो।
6. कागज़ को मेज़ पर रखकर सावधानी से खोलो।







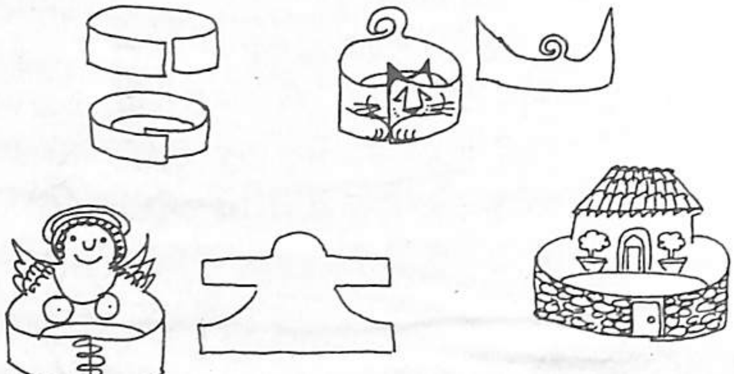
7. झालर की ऊपरी नोक में पेपर-क्लिप फँसाओ और उसे किसी ऊँचे स्थान से लटका दो।

कागज़ की मूर्तियाँ

अँगूठीनुमा मूर्तियाँ

आवश्यक सामान
- कागज़
- कैंची
- गोंद या स्टेप्लर
- क्रेयॉन या स्केच-पेन

कागज़ का कोई आकार काटो। उसके सिरों को गोंद या स्टेप्लर से जोड़कर एक अँगूठी बनाओ। स्केच-पेन से उसे सुन्दर ढंग से सजाओ।

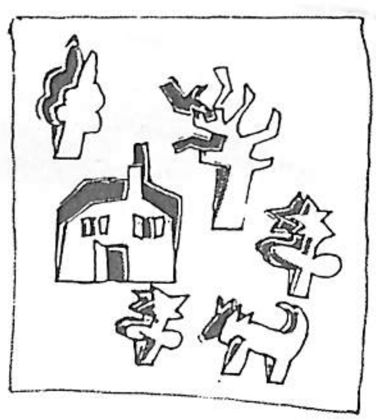


त्रि-आयामी चित्र

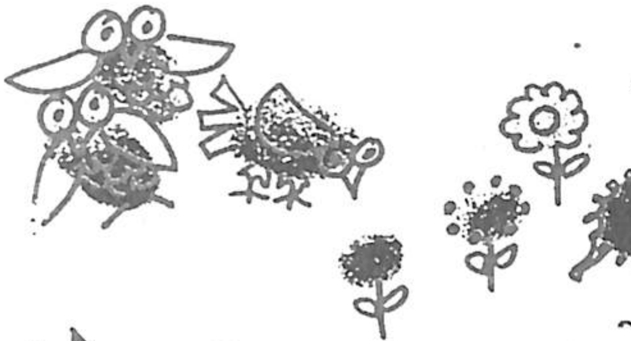
आवश्यक सामान • गत्ता या मोटी सख्त कार्डशीट • कैंची • क्रेयॉन या स्केच-पेन

1. कार्डशीट पर किसी शहर, कस्बे या गाँव का चित्र बनाओ। उसमें पेड़, पालतू जानवर, फूल आदि दिखाओ। सब के बीच में थोड़ी-थोड़ी जगह ज़रूर छोड़ना।
2. चित्र की मुड़ने वाली लाइनों (टूटी रेखा) के अलावा बाकी सभी लाइनों को काटो। काटने के लिए अगर तुम्हारे पास धारदार कैंची न हो तो चित्र को एक पुराने अखबार पर रखो और लाइनों पर किसी नुकीली पेंसिल से तब तक निशान बनाओ जब तक कार्डशीट कट न जाए।





3. आकृतियों को मोड़कर खड़ा करो।



एकलव्य के नए प्रकाशन







कुछ-कुछ बनाना

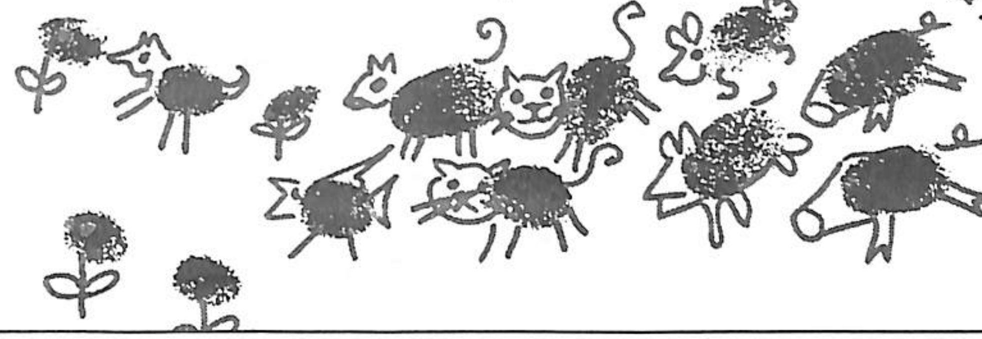


एक ऐसी किताब जो तुम्हें सैंकड़ों खिलौने बनाने के लिए उकसाएगी।

सरल निर्देश और सुन्दर चित्रांकन वाली यह किताब हर उम्र के पाठकों को कुछ-कुछ बनाने के लिए प्रेरित करेगी।

तो हो जाए इन छुट्टियों में कुछ-कुछ बनाना...

लेखक एवं चित्रकार - ऍन सायर वाइज़मैन
मूल अंग्रेज़ी पुस्तक *Making Things*
अनुवादक - अरविन्द गुप्ता
मूल्य - 100.00 रुपए



अक्कड़-बक्कड़

आलू कचालू कहाँ गए थे
टूटी टपरिया में सो रहे थे
कुत्ता ने लात दई रो रहे थे...



ऐसे तमाम मज़ेदार खेल गीत एक जगह, एक किताब में

मूल्य - 15.00 रुपए

पता

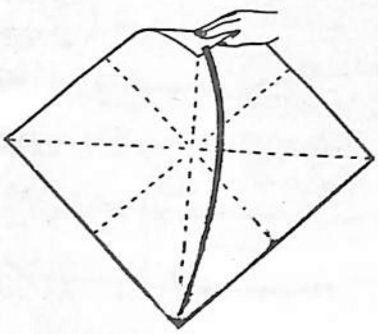
एकलव्य, ई-7/453 एच.आई.जी. अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, म.प्र. 462 016
फोन : 0755-246 3380, 554 9033
eklavyamp@mantrafreenet.com

किताबें मँगवाने के लिए भुगतान
(डाकखर्च 10% अतिरिक्त जोड़कर)
भोपाल में देय, 'एकलव्य' के नाम बने ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

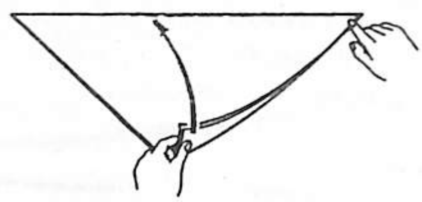
हेलमेट
कागज़ का



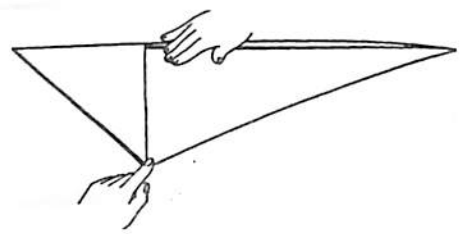
दो पन्नों वाला एक अखबार लो। अखबार को चित्रानुसार रख लो।



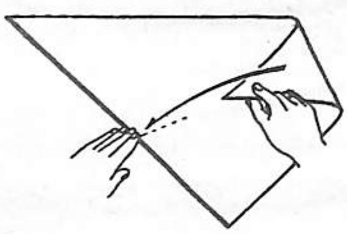
ऊपर के कोने को नीचे के कोने से मिलाकर मोड़ो।



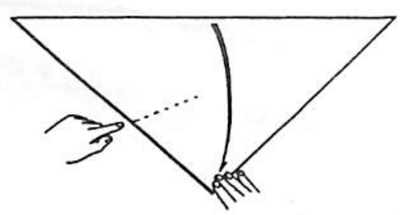
नीचे के कोने को ऊपरी रेखा से मिलाकर मोड़ो।



नीचे के कोने को हल्का सा दबाओ।

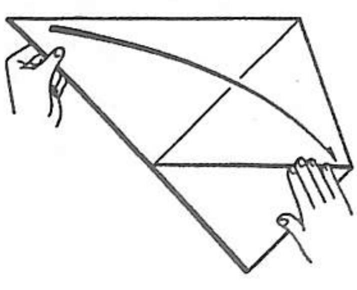


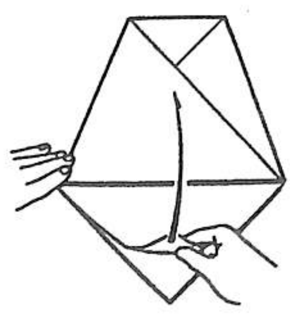
बाएँ कोने को दाहिने कोने तक लाकर मोड़ो।



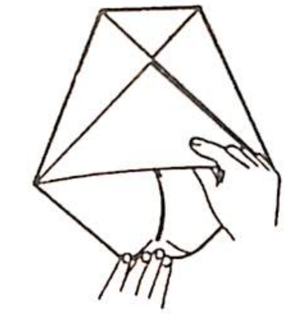
अभी-अभी बनाई तह खोल दो।

दाहिने कोने को पिछले मोड़ के निशान तक लाकर मोड़ो।



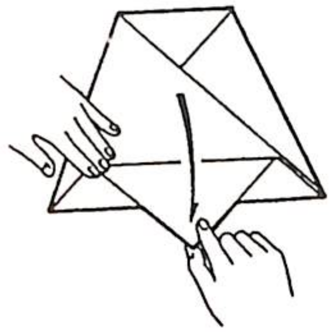


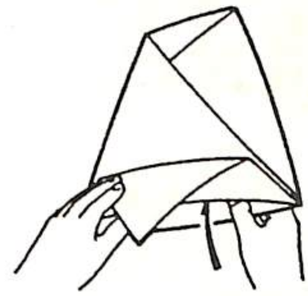
नीचे के कोने से ऊपरी परत को उठाकर जितना ऊँचा जाए ले जाओ और मोड़ दो। यह हेलमेट का छज्जा होगा।



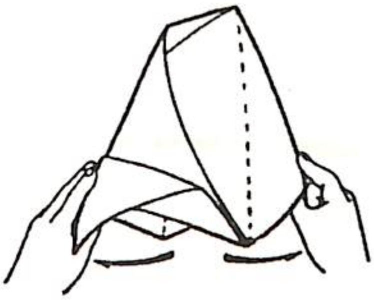
बची हुई परत के निचले
कोने को अन्दर दबा दो।

छज्जे को थोड़ा नीचे
करके मोड़ दो।





हेलमेट को दोनों हाथों
से खोलो।

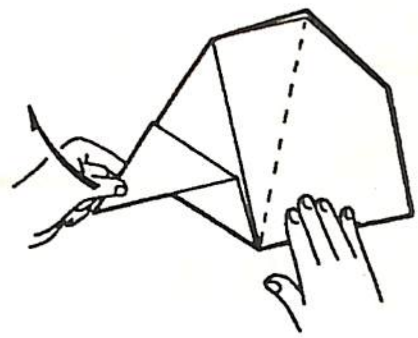


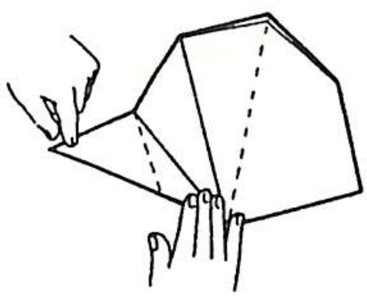
धीरे-धीरे इसे फैलाओ।



ऊपरी सिरे को उँगली
से थोड़ा दबा दो।

छज्जे को खोलकर
सीधा कर लो।





लो तैयार हो गया तुम्हारा हेलमेट।
पहनकर ज़रा आइने में देखो।
कैसा लगा?



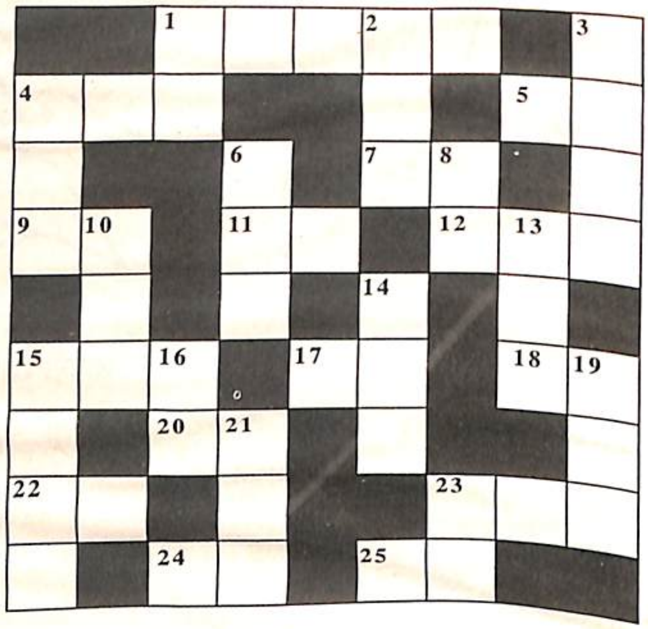
संकेत
बाएँ से दाएँ

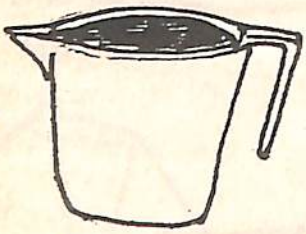
चित्र पहेली

1


4


5

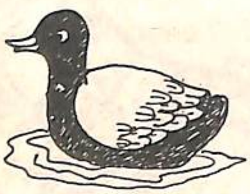



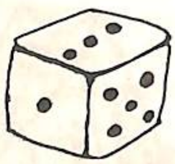
7


9


11

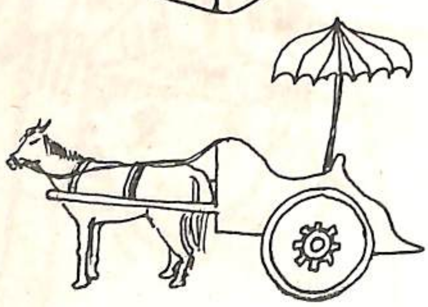

12 'ज़रा मीन' में है भूमि

15


17


18 जिसे बनाने के लिए बल्लेबाज़ दौड़ते हैं

20 'टहल' में बालों की लड़ी

22


23 'गरम' में है एक जलीय जीव

24


25 आधे से ज़्यादा, पर एक से कम

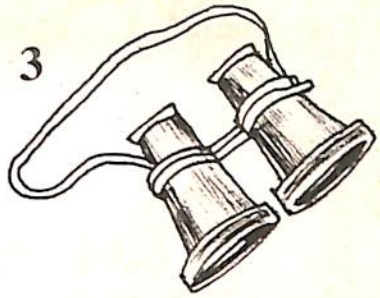
संकेत ऊपर से नीचे

1 'करनाल' में घोड़े के पैरों में लगनेवाली एक चीज़

2

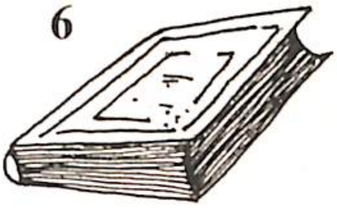


3



4 'नागपाल' में सिरफिरा

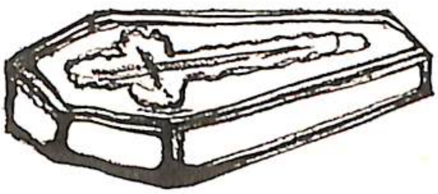
6



8



10



13



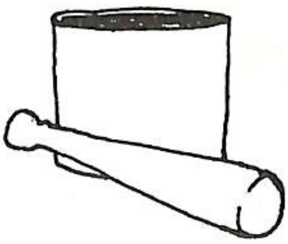
14



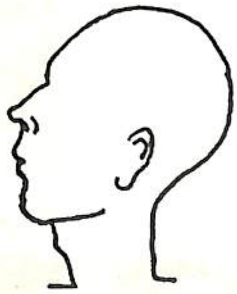
15 वाराणसी का एक और नाम

19 'तीन गाजर' में है दृष्टि, निगाह

16



21



23 नामक की उलटफेर में 'मत' या 'ना'

सा रे गा मा

- राजेश उत्साही

इस बार हो सकता है कि यह गीत बड़ों को बिल्कुल पसंद न आए। लेकिन हमें पता है कि तुम्हें बहुत पसंद है। और हो भी क्यों न इस गीत में तुम्हारे मन की बात जो कही गई है। पढ़ाई के साथ मस्ती या कि मस्ती के साथ पढ़ाई। सचमुच हम पाठशाला में ही नहीं सीखते हैं। पाठशाला के बाहर भी पढ़ने और सीखने के लिए बहुत कुछ होता है। यह सब हम अनजाने ही सीखते जाते हैं।

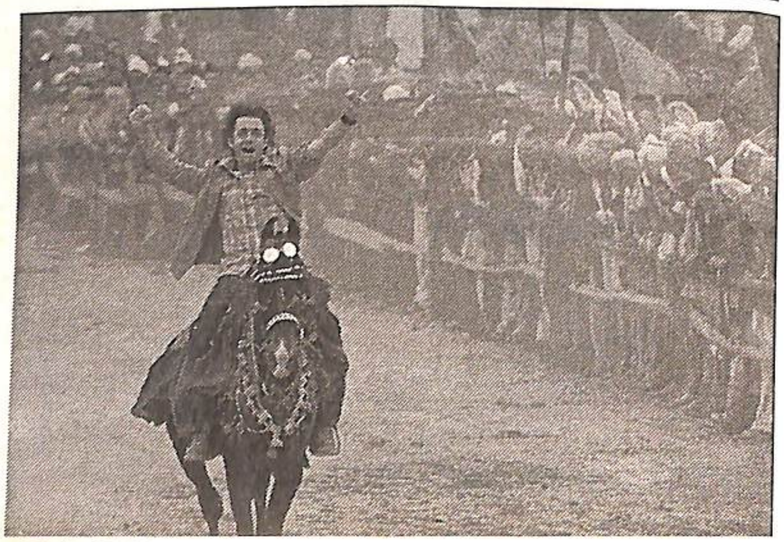
यह गीत 'रंग दे बसंती' फिल्म का है। तुम यह फिल्म जरूर देखना। कैसे एक छोटा-सा विचार या परिवर्तन हमारी जिन्दगी में बदलाव ला देता है।

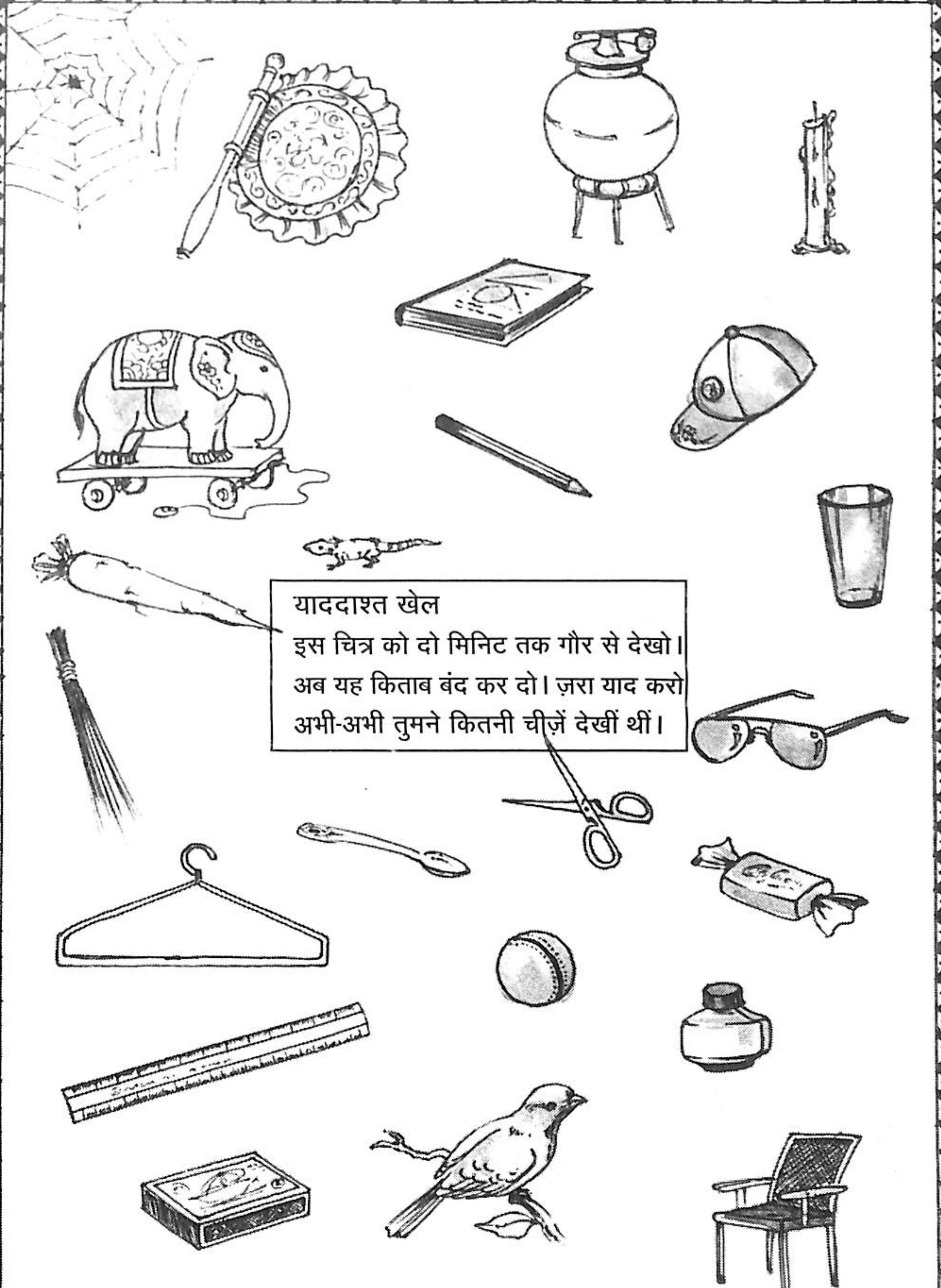
लूज कंट्रोल
लूज कंट्रोल
वन मोर टाइम
लूज कंट्रोल
आई एम रिबेल -२
ना कोई पढ़ने वाला ना कोई सीखने वाला - 2
अपनी तो पाठशाला मस्ती की पाठशाला - 2

लूज कंट्रोल
चेहरे की किताबें हैं हम वो पढ़ने आते हैं
ये सूरत तेरी मेरी मोबाइल लायब्रेरी
यारों की इक्वेशन है लव मल्टीप्लीकेशन है
जिसने दिल को जीता है
वो अल्फा है बीटा है - 3
लूज कंट्रोल लूज कंट्रोल
वन मोर टाइम
लूज कंट्रोल लूज कंट्रोल
लूज कंट्रोल
आई एम रिबेल

टल्ली होकर गिरने से समझी हमने ग्रेवेटी
इश्क का प्रेक्टीकल किया तब आई क्लियरटी
ना कोई पढ़ने वाला ना कोई सीखने वाला
नाटा ये सन्नाटा है देखो लम्बू शोर है
हर दिल में बुद बुद करता एच टू एस ओ फोर है
ना कोई पढ़ने वाला ना कोई सीखने वाला
अपनी तो पाठशाला मस्ती की पाठशाला-२
आई एम रिबेल
लूज कंट्रोल

संगीतकार - ए. आर. रहमान
गीतकार - प्रसून जोशी
गायक - नरेश अय्यर, मोहम्मद असलम



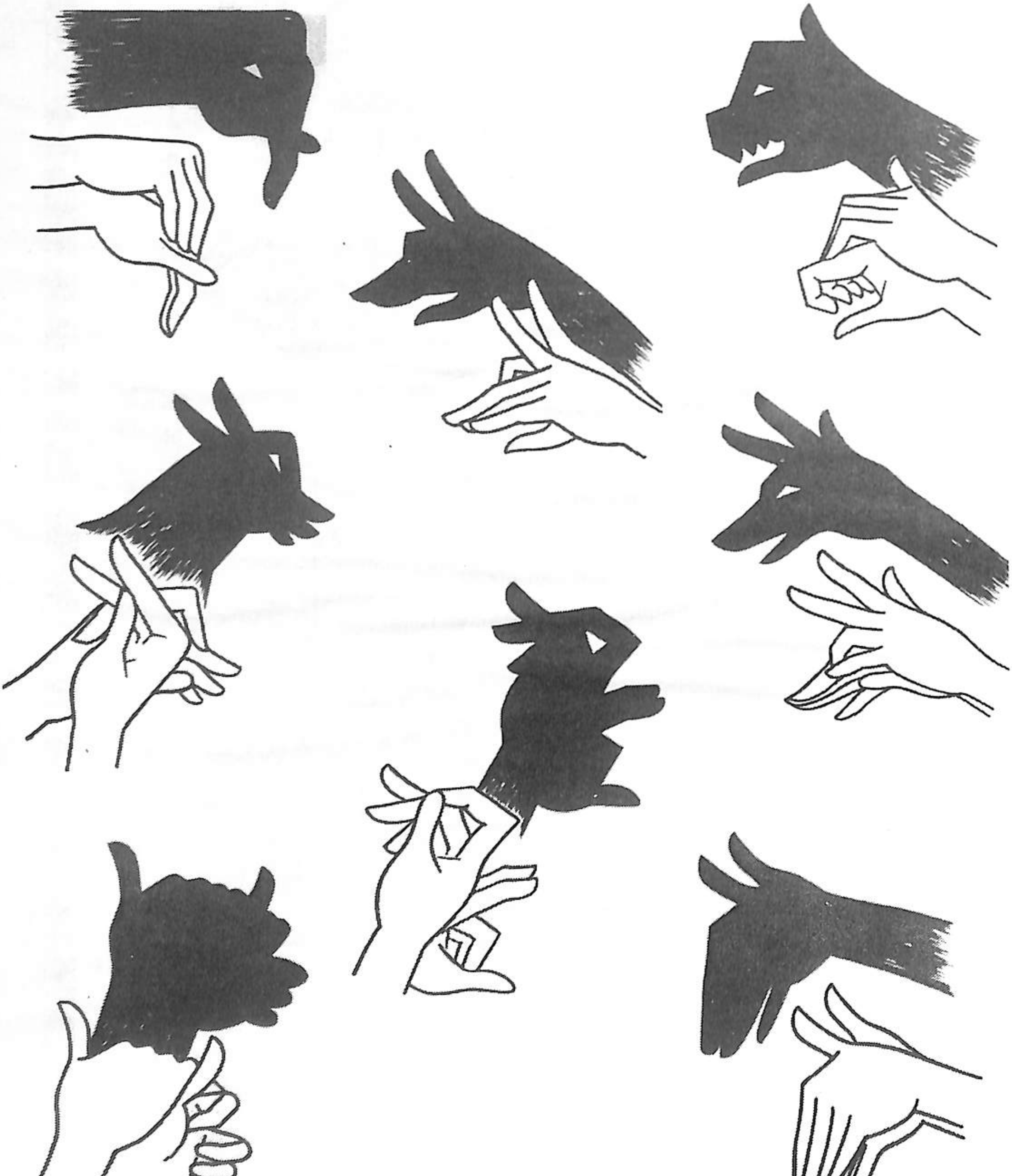


याददाश्त खेल

इस चित्र को दो मिनिट तक गौर से देखो। अब यह किताब बंद कर दो। ज़रा याद करो अभी-अभी तुमने कितनी चीज़ें देखीं थीं।

चित्र - विवेक वर्मा

कमाल परछाई के



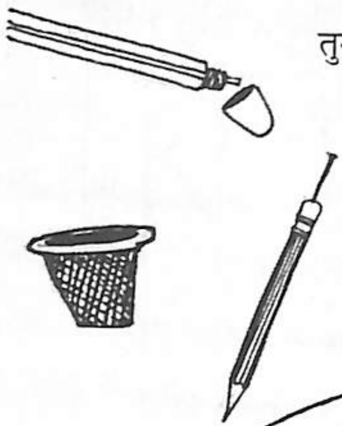


इस छुटंकी-सी तस्वीर में थोड़ी न बहुत पैंतीस से
ज़्यादा **प** से शुरू होने वाली चीज़ें हैं।
देखें तुम कितनों को पहचान पाते हो! सूची बनाओ।

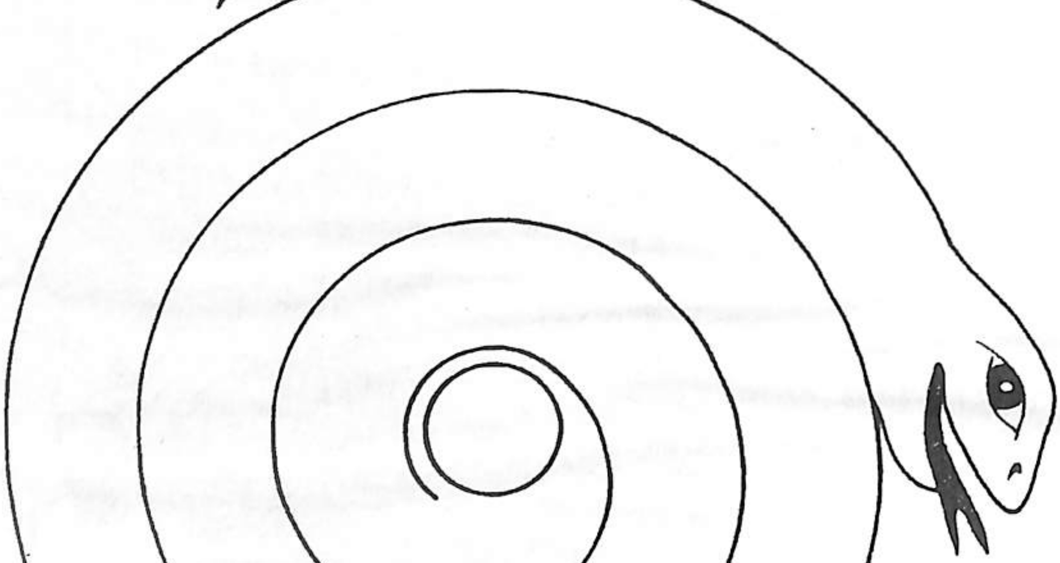
घूमता साँप

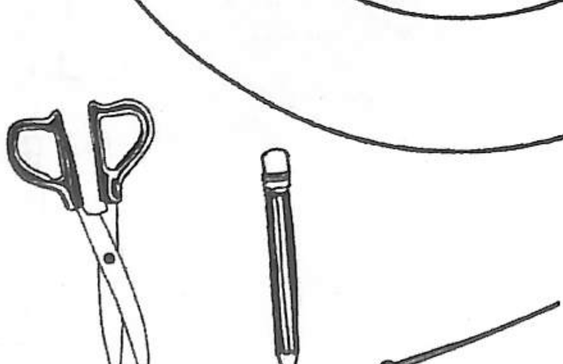
ज़रूरी चीज़ें

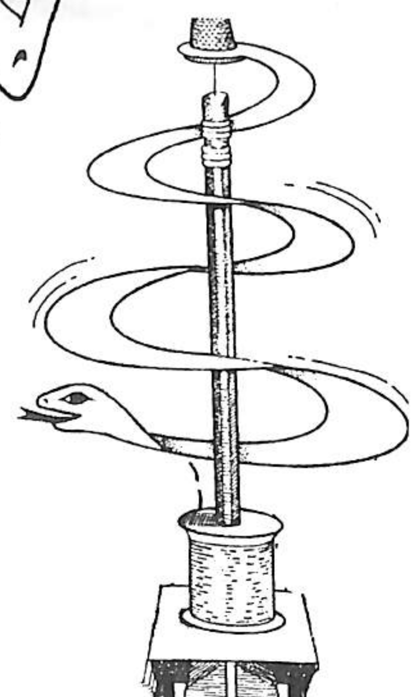
कैंची, रबर लगी पेंसिल,आल्पिन, पेन का टोपीनुमा पिछला हिस्सा या तुरपाई करते वक्त उँगलियों में पहनने वाला छल्ला



सबसे पहले चकमक के पन्ने पर बने साँप के चित्र को लाइन के ऊपर से काट लो। अब बीच के गोले के बीचों बीच एक छेद बना लो। छेद इतना बड़ा हो कि इसमें पेन का हिस्सा ठीक से घुस सके। रबर वाली पेंसिल की रबर में एक आल्पिन घुसा दो। पेन के टोपीनुमा हिस्से को इस आल्पिन के ऊपर लटका दो। साँप ठीक तरह से घूम सके इसके लिए ज़रूरी है कि पेंसिल पर लटकता साँप ज़मीन पर न टकराए। इसके लिए तुम्हें पेंसिल को आलू या ऐसी ही किसी चीज़ पर जमाकर थोड़ा ऊँचा करना होगा। चाहो तो साँप को अपने पसंदीदा रंगों से सजा लो।







अप्रैल 2006 अंक की माथापच्ची एवं चित्र पहेली के हल

2. बनाया जा सकता है।

3. C - वाला!

4. तेरह।

4. छह बार।

6. सूरज का चेहरा, आइसक्रीम, उफ गर्मी, आँखें, मुँह, सप्पू, गिलास, झण्डा, कालर, बाल।

तो	ता	प	री		चा	क	ले	ट
प			छ	पा	क			क
गा	लि	व				ज	ल	सा
ड़ी		नि		को	य	ल		ल
	छा	या				प्र	श्न	
अ		इ	म	ली		पा		वा
ज	वा	न				त	क	ली
ग			ती	त	र			बॉ
र	ह	मा	न		बी	र	ब	ल

'प' से शुरू होने वाली चीज़ें के उत्तर

1. पक्षी, 2. पपीता, 3. पीपा, 4. पोटली, 5. पूँछ, 6. परदा, 7. पतंग, 8. पताका, 9. पहाड़, 10. पियानो, 11. पालना, 12. पलंग, 13. पेचकस, 14. पेच 15. पाँच, 16. पाँच, 17. प्लेट, 18. पंडित, 19. पट्टी, 20. पेट, 21. पज़ामा, 22. पत्ता, 23. प्याज़, 24. पंखा, 25. पतंगा, 26. पिरमिड, 27. पुस्तक, 28. पगड़ी, 29. परी, 30. पोस्टकार्ड, 31. पादरी, 32. पायल, 33. पिल्ला, 34. पतीला, 35. पचास।

चित्र में गल्तियों के उत्तर

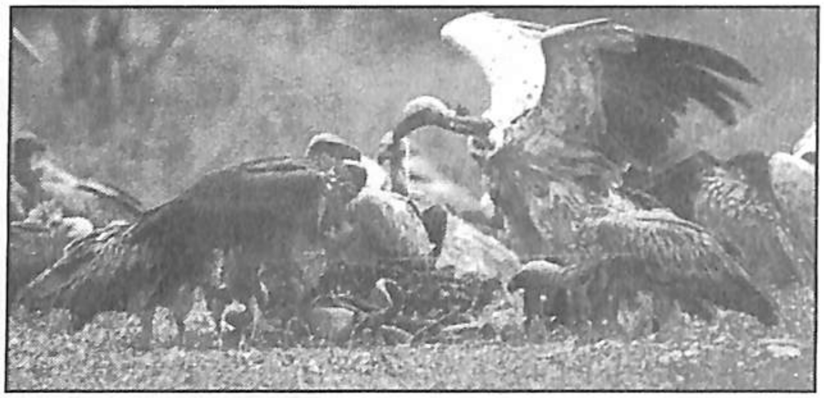
1. दिन में उल्लू उड़ रहा है। 2. दिन में तारा दिख रहा है। 3. चम्पा के पेड़ पर आम लगे हैं। 4. पेड़ पर चढ़ी बच्ची का एक ही हाथ है। 5. बच्ची के झूले में एक ही रस्सी है। 6. बच्ची घास पर मोटरसाइकिल चला रही है। 7. गाय के शरीर पर शेर का चेहरा है। 8. बन्दर अखबार पढ़ रहा है। 9. झूला झूल रहे बच्चों का एक ही हाथ है। 10. मछली रेत में तैर रही है। 11. गमले में इतना बड़ा पेड़।



कार्टून - आशीष नगरकर

ग़ायब होते गिद्ध

कौस्तुभ शर्मा



कुछ दिन पहले मैं भोपाल के एक स्कूल में गया था। वहाँ मैंने बच्चों के एक समूह से पूछा- आपमें से किस-किसने गिद्ध देखा है? डेढ़ सौ बच्चों में से सिर्फ दस ने अपने हाथ खड़े किये।

यही सवाल अगर दस साल पहले पूछा जाता तो शायद सारे बच्चे अपने हाथ खड़े कर देते। सच तो यह है कि दस साल पहले कोई यह प्रश्न पूछना भी ज़रूरी नहीं समझता। हमारी आदत है कि जो चीज़ हमारे आसपास बहुतायत में हो, उस पर हम ध्यान नहीं देते। हमारा ध्यान ऐसी चीज़ें ही खींचती हैं जो दुर्लभ हैं। कहा भी तो जाता है कि घर की मुर्गी दाल बराबर।

लेकिन जो चीज़ें हमारी बीच से गायब होती जा रही है उनके बारे में सोचना इसलिए ज़रूरी है कि छोटी से छोटी चीज़ के भी नहीं रहने से हमारी जैवविविधता पर खराब असर पड़ता है। छोटी से छोटी चीज़ भी हमारे आसपास को, हमारे पर्यावरण को उसके प्राकृतिक रूप में रख पाने में बड़ी भूमिका अदा करती है।

प्रकृति का सबसे बड़ा सफाई कर्मचारी

गिद्ध मरे हुए पशुओं को खाते हैं। वे आसमान में ऊँचे उड़ते हैं और अकसर सूनी जगहों पर डेरा डालते हैं। गिद्ध का सिर गंजा और चोंच मुड़ी हुई और तीखी होती है। इन्हें बदसूरत माना जाता है। इनकी गरदन लम्बी और पंख बहुत मजबूत होते हैं। अपनी इसी बनावट के कारण वे ऊँचे आकाश में उड़ते हुए भी अपने भोजन की पहचान कर लेते हैं और कुछ ही घण्टों में पूरे जानवर की लाश को चट कर जाते हैं। यदि गिद्ध न हों तो जानवरों की लाशों महीनों उधर-उधर पड़ी रहें और बदबू तथा बीमारियाँ फैलाती रहें। इस तरह गिद्ध धरती को साफ-सुथरा रखने में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कितने तरह के गिद्ध

भारत में गिद्धों की सात किस्में पायी जाती हैं। इनमें से दो तो हिमालय के पहाड़ों में रहती हैं और सर्दियों में भोजन की खोज में मैदानों में उतरती हैं। गिद्धों की उम्र काफी लम्बी होती है और उनमें वंशवृद्धि काफी धीमी होती है। एक मादा साल में औसतन एक ही अण्डा देती है। गिद्धों की उड़ान का दायरा हज़ारों किलोमीटर तक फैला जाता है।

जान को खतरा

अब आते हैं वहीं जहाँ से हमने बात शुरू की थी। मैंने भोपाल में स्कूल के बच्चों से वह सवाल क्यों पूछा? इसका जवाब यह है कि हमारे देश में पाये जाने वाले गिद्धों में से 97 प्रतिशत पहले से

समाप्त हो चुके हैं। हालत यह है कि पक्षियों की यह प्रजाति ही नष्ट होने के कगार पर है। यह हाल रहा तो कुछ ही वर्षों में गिद्धों की तीन किस्में हमेशा के लिए समाप्त हो जाएँगी।



कौन मार रहा है गिद्धों को?

गिद्धों के गायब होते जाने के मुख्य रूप से तीन कारण हैं। पहला कारण यह है कि आजकल गाय - भैंस आदि जानवरों के बीमार पड़ने पर उन्हें डाइक्लोफेन्स नामक एक दर्दनाशक दवा दी जाती है। अगर जानवर मर जाये और उसका माँस गिद्ध खा लें तो यह दवा भी उसके पेट में चली जाती है। इससे गिद्ध के महत्वपूर्ण अवयवों में यूरिक एसिड की मात्रा बढ़ जाती है जो धीमे ज़हर की तरह काम करती है और अंत में गिद्ध मर जाता है।

गिद्धों के नष्ट होने का दूसरा कारण भोजन की कमी और जंगलों का कटते जाना भी है। इससे पेड़ों पर रहनेवाले गिद्ध शान्ति से अपना घोंसला नहीं बना पाते और इनके भोजन में हिस्सा बँटाने आवारा कुत्ते और सियार-चील कव्वे आदि भी आ जाते हैं। तीसरा कारण यह है कि कई बार गिद्ध उड़ते हुए हवाईजहाज़ों से टकरा जाते हैं। अब हवाई जहाज़ के आगे बेचारे गिद्ध की क्या बिसात। इसलिए हवाई अड्डों के आसपास के क्षेत्रों में मरे पशु तथा भोजन आदि डालने की मनाही होती है।

एक और कारण भी है। आमतौर पर गिद्ध को मनहूस माना जाता है। लोग उसे अपने आसपास रखना भी नहीं चाहते और दिखते ही उसे उड़ा देते हैं। यदि जल्दी ही अपनी सोच न बदली तो शायद हम फिर इस उपयोगी पक्षी को देख ही न पाएँ।

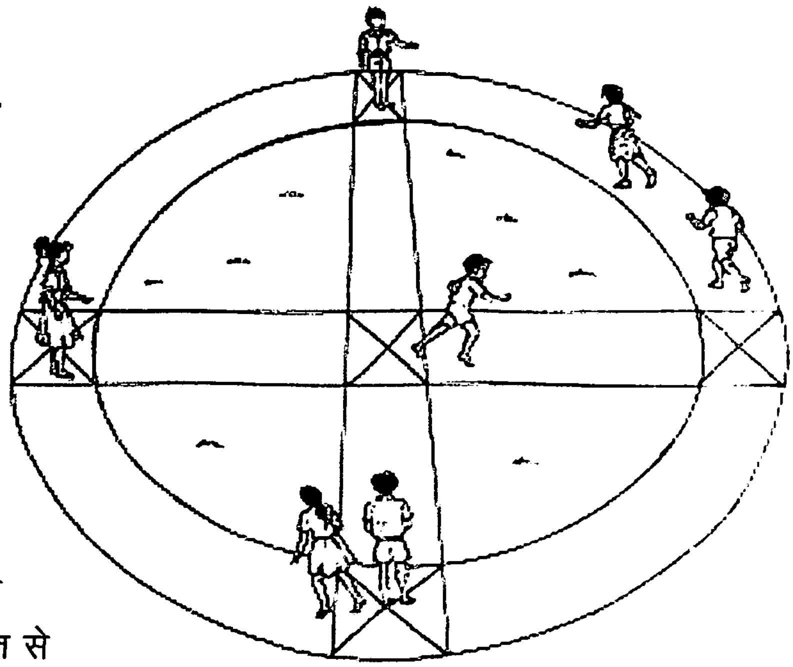
गिद्धों को बचाने के लिए देश में गिद्धों के लिए कुछ विशेष प्रजनन स्थल बनाने का निर्णय लिया गया है। भोपाल स्थित वन विहार भी इनमें से एक है।

एक समाचार के अनुसार गिद्धों को बचाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने डाइक्लोफेन पर प्रतिबंध लगा दिया है। दवा निर्माता कम्पनियों ने भी डाइक्लोफेन के स्थान पर दूसरे विकल्प अपनाने पर सहमति जताई है।

तीन प्याले हैं या...



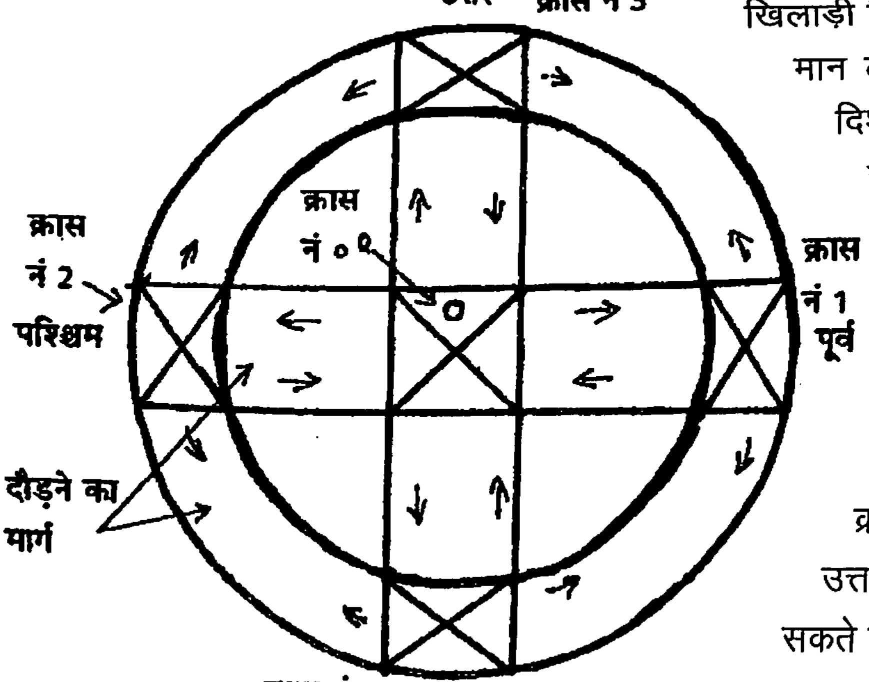
छुअमछुआई उर्फ कुण्डा



चलो एक मज़ेदार खेल से तुम्हारा परिचय कराते हैं। इसे कोई गोला कहता है कोई कुण्डा कहता है। इस खेल को खेलने के लिए तुम्हे भारी-भरकम खेल सामानों की ज़रूरत नहीं पड़ती है। नीचे दिया गया गोला बनाने के लिए चाहो तो चूने का इस्तेमाल करो या फिर यूँ ही किसी नुकीली चीज़ से कुरेद कर बना लो। गोला तो तुम चित्र देखकर बना ही लोगे।

अब नियमों की बात करते हैं।

सबसे पहले तो तुम्हे उस खिलाड़ी का चयन करना है जो दाम देगा। उसके तो तुम पचासों तरीके जानते होगे ,..। दाम देने वाला गोले के बीच खड़ा होगा। बाकी के जो चार चौकोर दिख रहे हैं उनमें अन्य खिलाड़ी खड़े रहेंगे। बीच में खड़ा खिलाड़ी यानी दाम देने वाला क्रास में खड़े खिलाड़ियों को छूने की कोशिश करेगा। बीच में खड़ा खिलाड़ी क्रास में खड़े किसी खिलाड़ी को भागकर पकड़ने की कोशिश करता है। अगर वह अपने चारों ओर बनी लाइन नम्बर-एक के बाहर पैर रख देता है तो उसे उसी दिशा में दौड़ना पड़ेगा। बाकी के खिलाड़ी जिस दिशा में चाहें दौड़ सकते हैं।

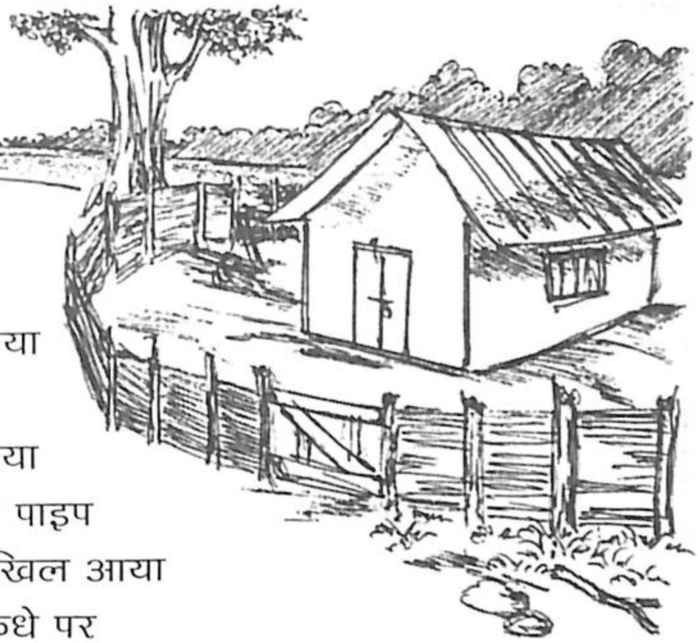


मान लो दाम देने वाला खिलाड़ी पश्चिम दिशा में भागकर जाता है तो अन्य खिलाड़ी उत्तर या दक्षिण दिशा में जा सकते हैं। दाम देने वाला खिलाड़ी क्रास नम्बर 2 में आकर वापस क्रास नम्बर 0 में या उत्तर या दक्षिण में बाकी खिलाड़ियों को आउट करने के लिए भाग सकता है। बाकी खिलाड़ी 0 क्रास में से गुजर कर उत्तर से पूर्व, उत्तर से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण में जा सकते हैं।

● प्रस्तुति - अनिल धीमान

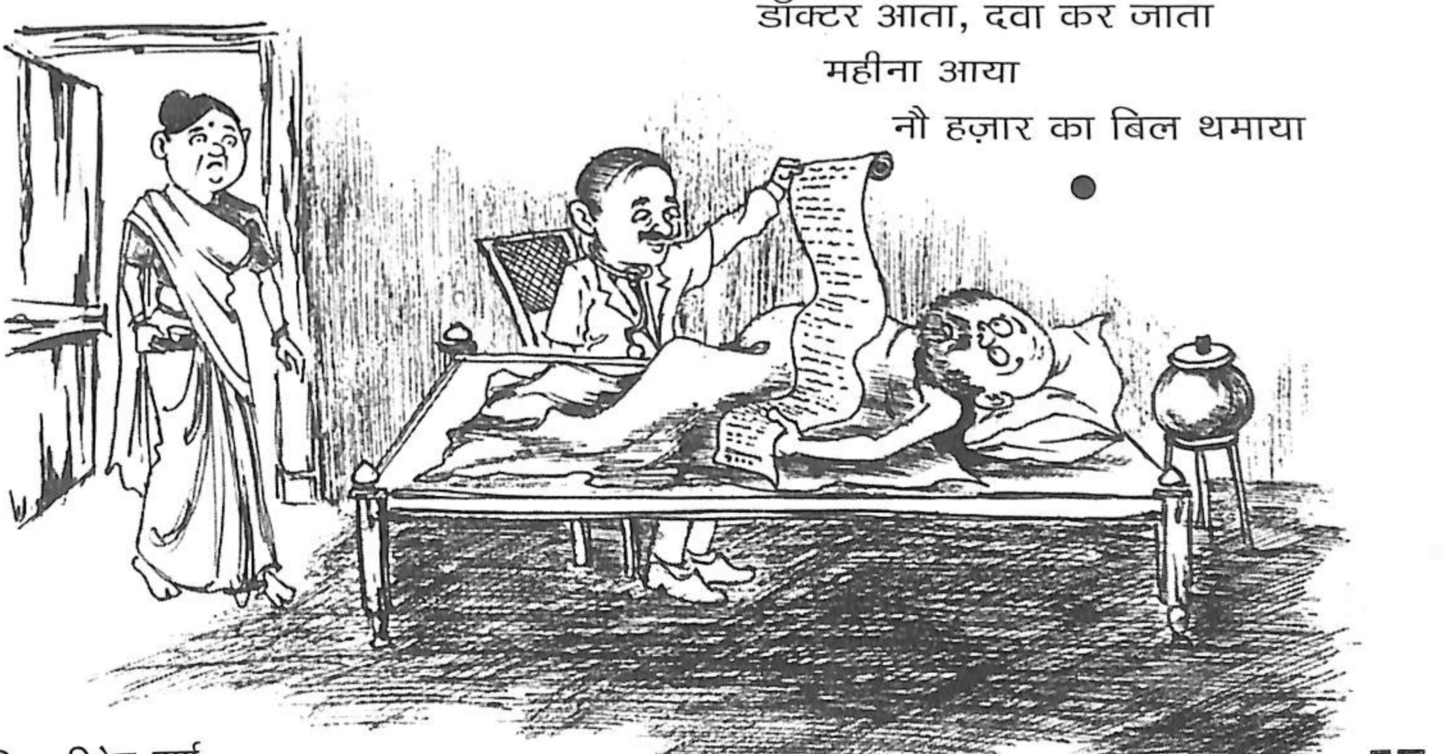
कच्चा चोर

- हरदर्शन सहगल





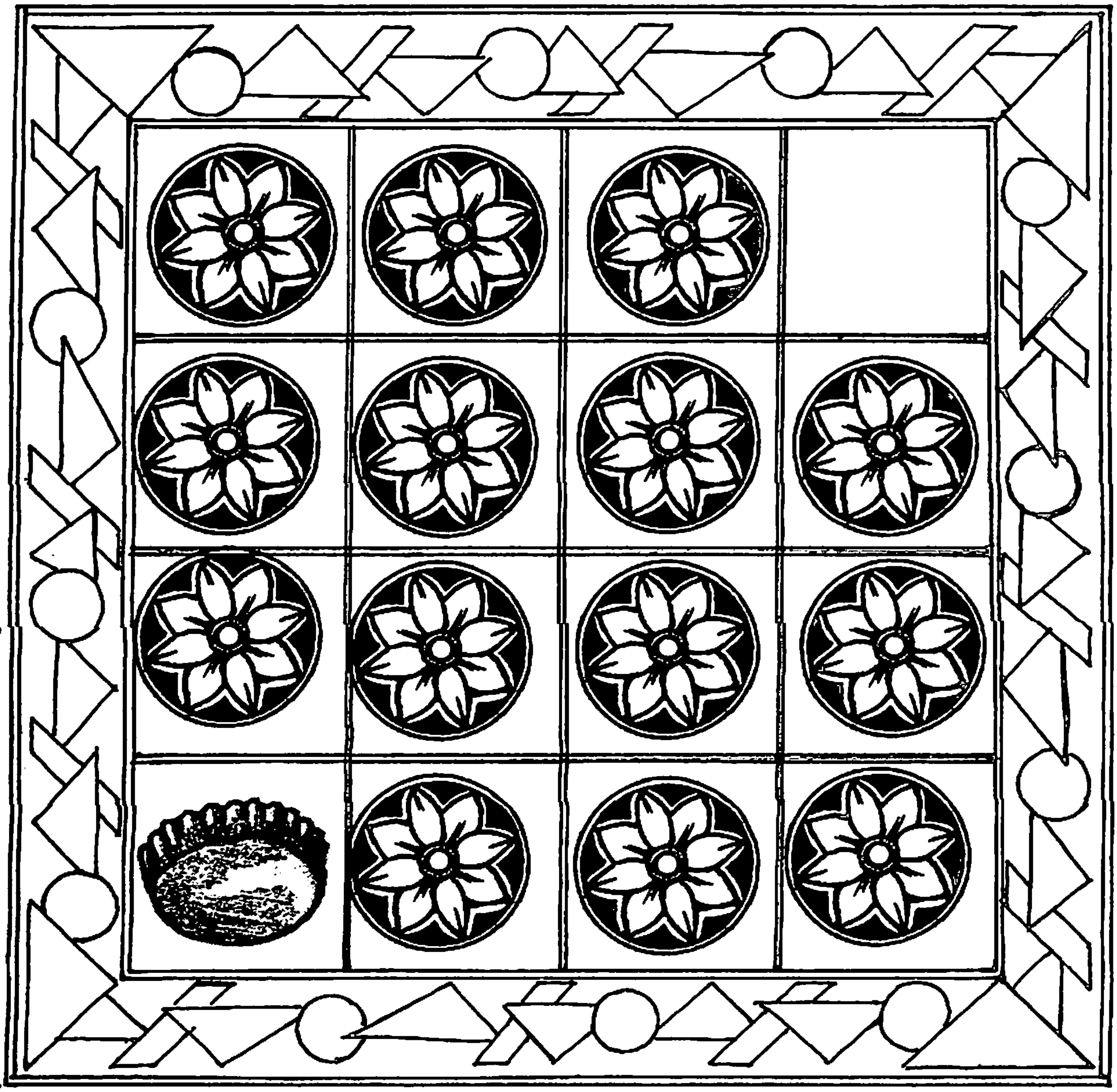
चोर आया
शंभु चौधरी का घर खुला पाया
मन ललचाया
अंदर जाते ही घबराया
बाहर पड़ा भारी पाइप
देख दिल खिल आया
लाद कंधे पर
चार मील जा बेच आया
दो सौ रुपये पाया
ले टूटी कमर घर आया
दे सेक दे सेक उसे गर्माया
दस दिन हुए आराम न आया
हाय मरा हाय मरा शोर मचाया
घर वालों को तरस आया
सबसे बड़ा डॉक्टर बुलाया
डॉक्टर आता, दवा कर जाता
महीना आया
नौ हज़ार का बिल थमाया



चित्र- विवेक वर्मा

एक मज़ेदार खेल

एच. एस. राधा



चित्र - विवेक वर्मा

इस खेल के लिए तुम्हें बस दो तरह की गोटियाँ जुटानी पड़ेंगी। जैसे शतरंज में घोड़ा ढाई घर चलता है वैसे ही बोतल का यह ढक्कन चलेगा। (यानी ढक्कन के आजू-बाजू या सीधे के दो खानों के बाद तिरछे में एक खाना, एल के आकार में) जहाँ-जहाँ यह जाएगा, वहाँ-वहाँ की गोट गड़प। दाईं तरफ वो जो खाली खाना दिख रहा है न, वहाँ पहुँचना है इसे। और हाँ, इसके पहले इसे सारी चौदह गोटियाँ गड़प करनी हैं। इस ढक्कन को उस खाली घर तक पहुँचाने के लिए तुम्हें कुल कितनी चालें चलनी पड़ेंगी? कम चालों में अपना काम करना वाला होगा उस्ताद।

दाँवपेचों की थैली



आफन्ती की ख्याति देश-विदेश में फैल चुकी थी। एक बादशाह को इस पर बहुत गुस्सा आया। उसने मंत्रियों से कहा, "सुना है कि पड़ोसी मुल्क में कोई आफन्ती अपने बादशाह को हमेशा उल्लू बनाता है।"

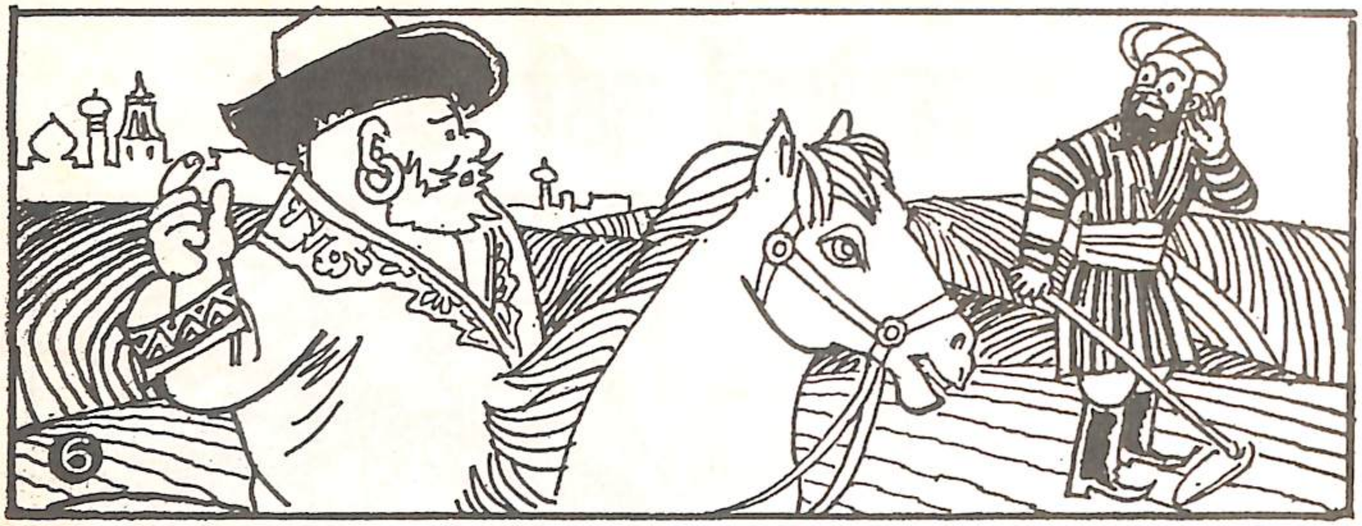
"वह बड़ा अक्लमंद और आलिम-फाज़िल है। उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।" मंत्रियों ने जवाब दिया। इस पर बादशाह ने कहा, "मुझे इस पर विश्वास नहीं। एक मामूली आदमी बादशाह से भी होशियार कैसे हो सकता है!"





"आप सही कह रहे हैं साहब!" मंत्रियों ने झट अपनी बाद बदलते हुए कहा। बादशाह ने आफन्ती को शिकस्त देने के लिए उसके देश जाने की ठानी।

वह घोड़े पर उसके देश पहुँचा।





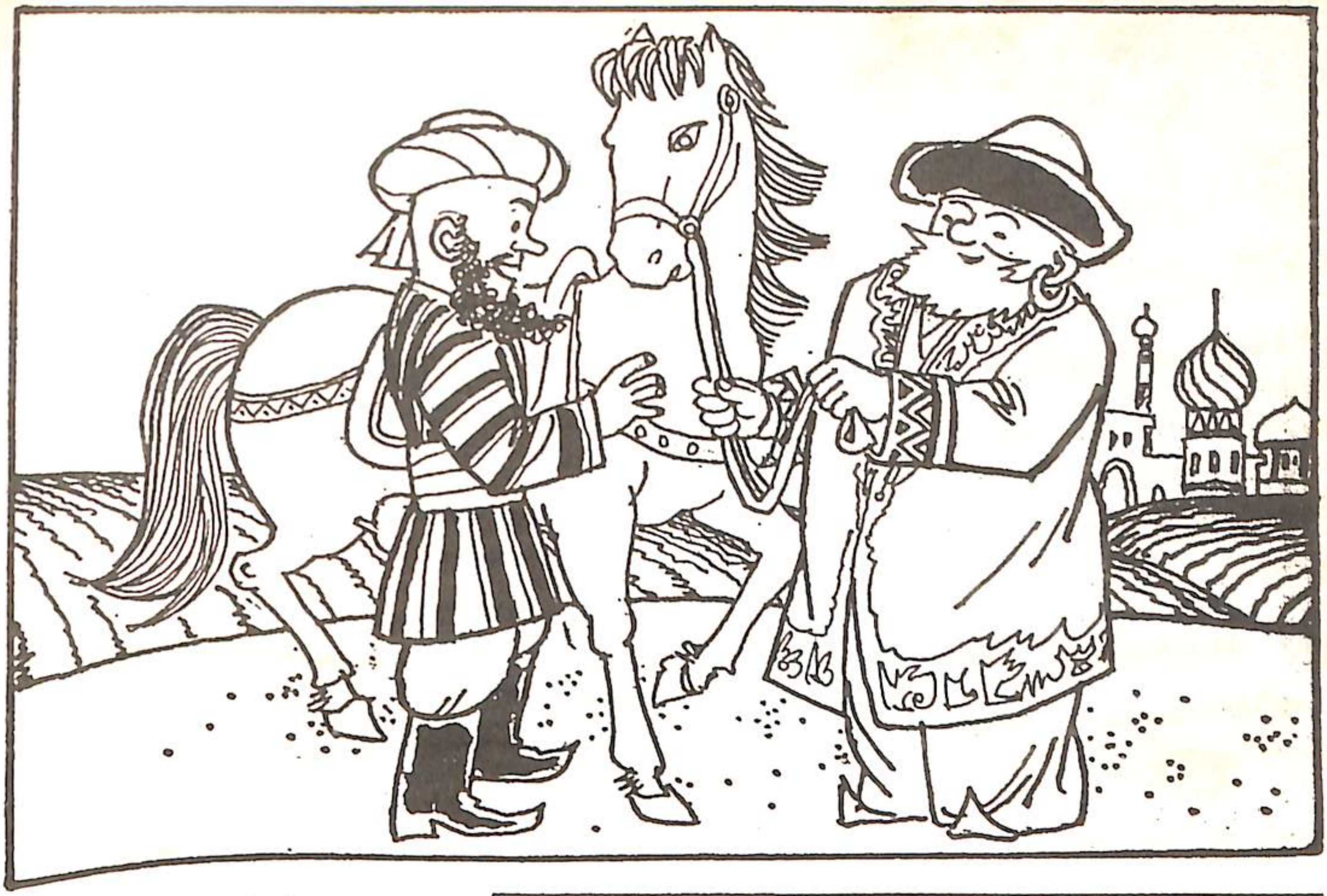
उसने खेत में काम करते हुए एक आदमी से पूछा, "तुम्हारे देश में आफन्ती कौन है? मैं उससे मिलकर देखना चाहता हूँ कि वह आखिर कितना होशियार है!"

"मैं ही आफन्ती हूँ। कहिए आपकी क्या खिदमत करूँ?"

"ओह, तुम्हीं आफन्ती हो!" बादशाह कटाक्ष करता हुआ बोला। "सुना है, तुम बड़े धोखेबाज हो। क्या तुम मुझे धोखा दे सकते हो?"

"ज़रूर दे सकता हूँ," आफन्ती ने मुस्कराते हुए कहा। "विश्वास नहीं, तो कुछ देर इन्तज़ार कीजिए। मैं घर से दाँवपेंचों की थैली ले आऊँ। तब आप हार मान लेंगे। अगर आप मेरे दाँवपेंचों से नहीं डरते, तो मुझे अपना घोड़ा दें, ताकि मैं जल्दी लौट सकूँ।"

"ठीक है, लाओ अपनी दाँवपेंचों की थैली! ऐसी दस थैलियाँ भी मेरे सामने बेकार साबित होंगी!"



बादशाह घोड़े से उतरा और लगाम आफन्ती को थमाते हुए कहा, "फौरन लौटना, मैं तुम्हारे हर दाँवपेंच नाकाम कर दूँगा!"

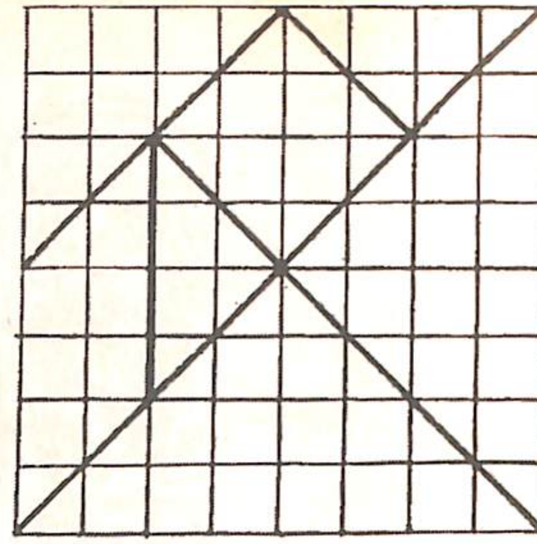
आफन्ती उछलकर घोड़े पर सवार हो गया और पल भर में बादशाह की नज़रों से ओझल हो गया। बादशाह उसकी बाट जोहता रहा।

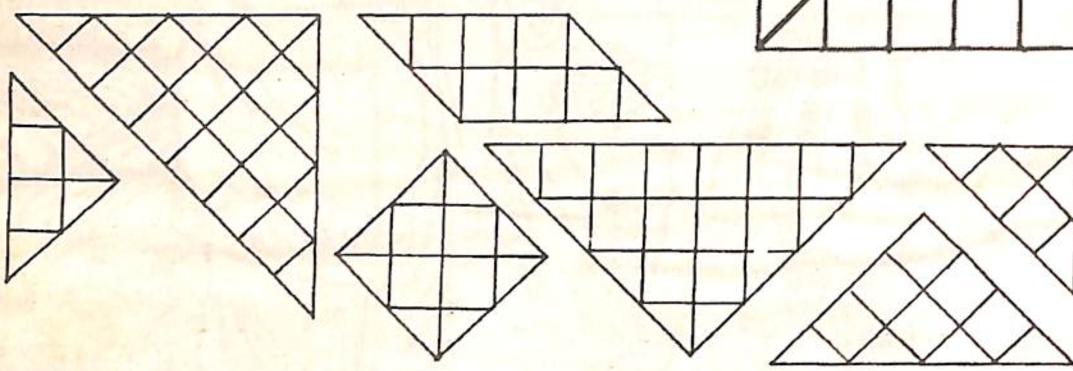
सूरज डूब जाने पर भी आफन्ती न लौटा तो वह समझ गया कि उसने धोखा खाया है। रात के अँधेरे में वह अपना-सा मुँह लेकर स्वदेश लौट गया। ●

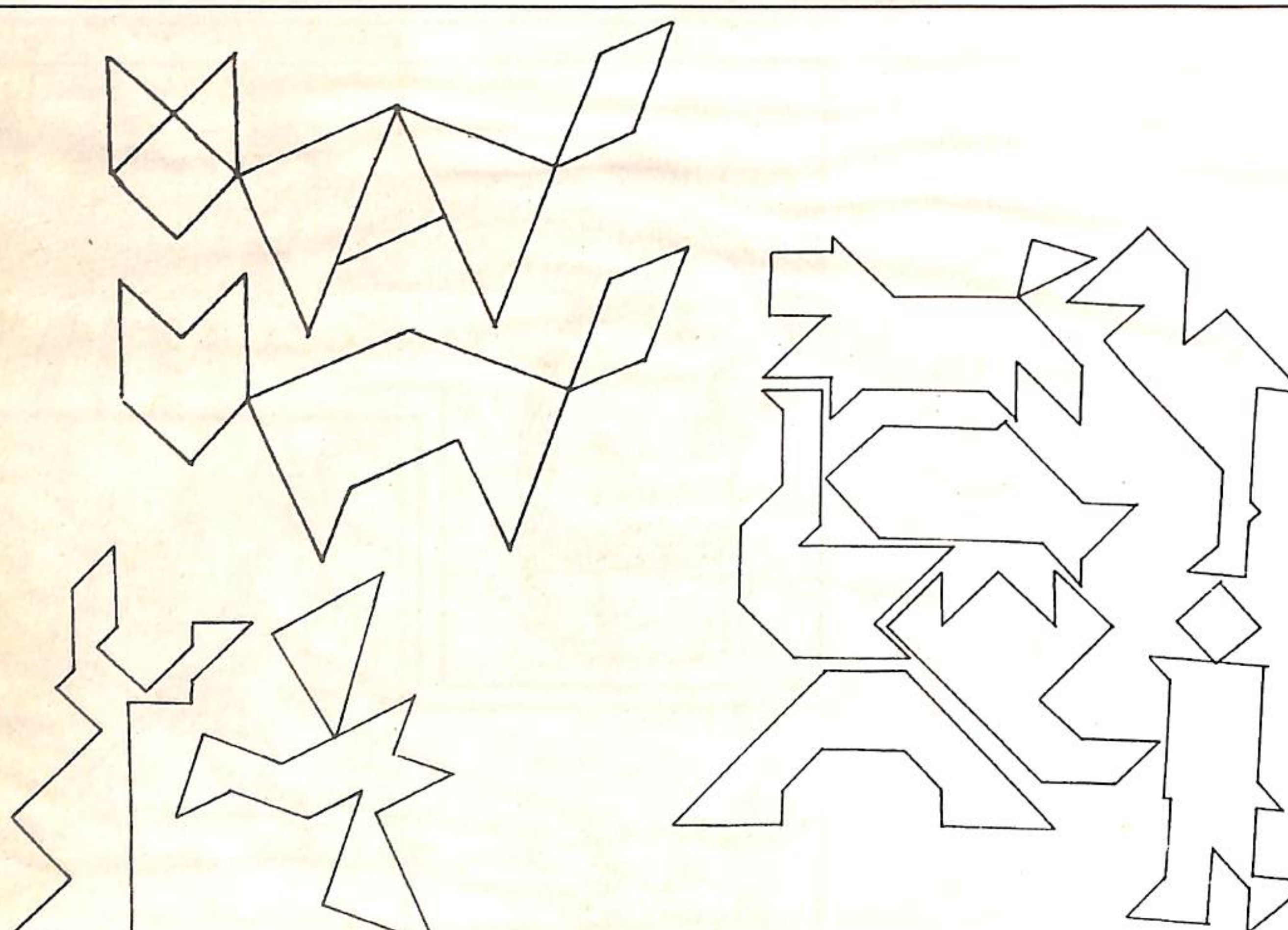


टेनग्राम

टेनग्राम एक चीनी पहेली है। इसके सात टुकड़ों से हज़ारों आकृतियाँ बन सकती हैं। यहाँ दी गई आकृति को मोटी लाइनों पर काटोगे तो तुम्हें सात टुकड़े मिल जाएँगे। और फिर थोड़ी बहुत उठापटक के बाद तुम इन्हीं सात टुकड़ों से नीचे दी गई आकृतियाँ बना सकते हो। यकीन नहीं होता न! चलो करके देखते हैं।







इस चित्र में कई गड़बड़ियाँ हैं। क्या तुम सिर्फ पाँच मिनिट में इस चित्र की दस गल्तियाँ ढूँढ सकते हो?

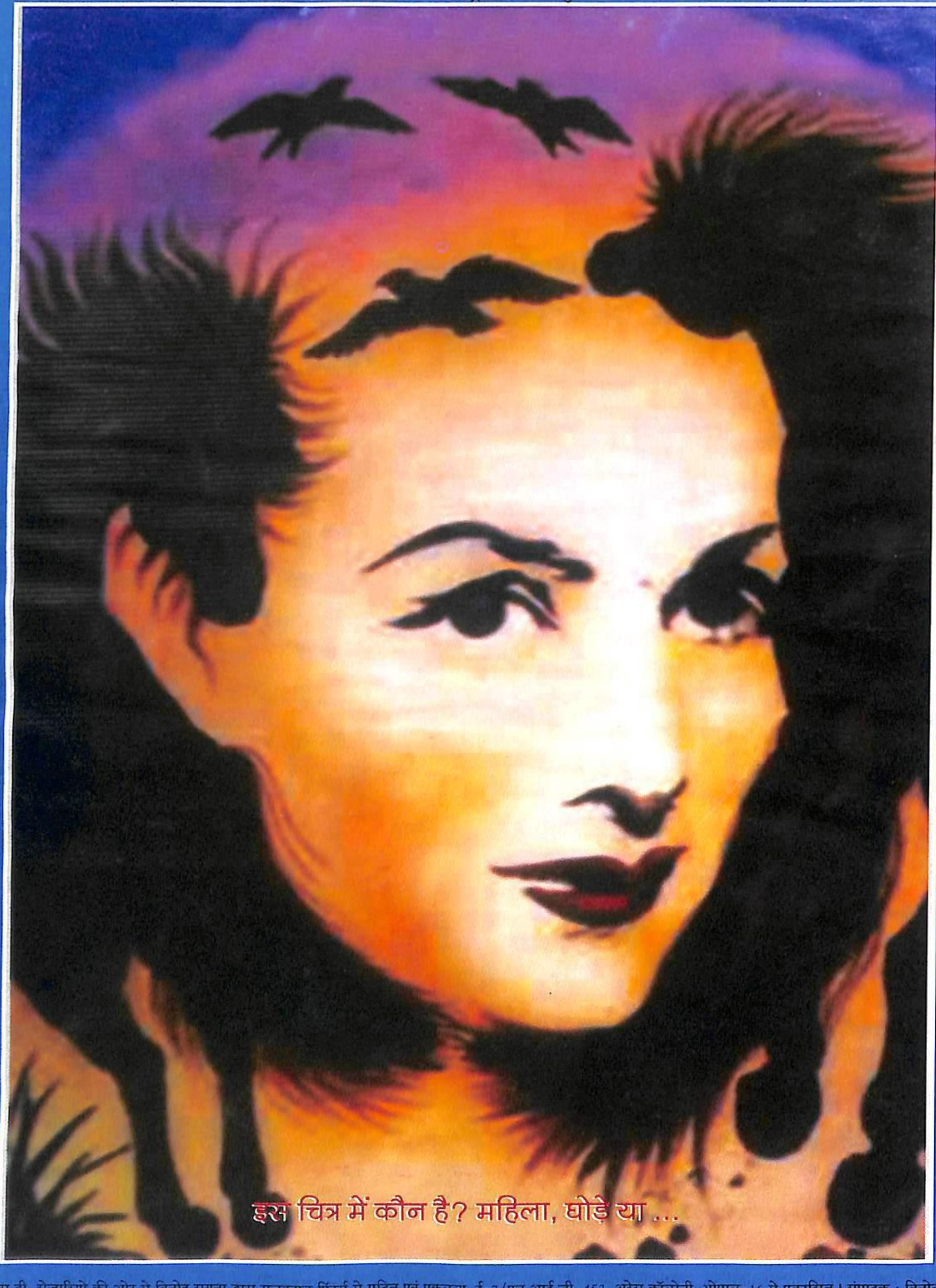




साभार – ड्रीमलैण्ड प्रकाशन की 'आर्ट एण्ड क्राफ्ट' से

माचिस की तीलियों एवं रंगीन कागज़ से बना चित्र

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2005-08



रेक्स डी. रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना